राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक बुलेटिन

आप की आवाज

www.aapkiawaaznews.in

नई दिल्ली,समस्तीपुर से एक साथ प्रकाशित

तेज खबर तेज असर

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

वर्ष: 04 | अंक : 109 | रविवार 26 जुलाई 2025 | पृष्ठ – 06 | मूल्य : 3 रूपये

संविधान से 'समाजवाद' और 'धर्म निरपेक्ष' शब्द नहीं हटाए जाएंगे

- राज्यसभा में सरकार ने लिखित जवाब दिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने गुरुवार को राज्यसभा में बताया कि संविधान की प्रस्तावना से 'समाजवाद' और 'धर्म निरपेक्ष' शब्द हटाने की कोई मौजूदा योजना या इरादा नहीं है। ये शब्द आपातकाल के दौरान जोड़े गए थे। कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने लिखित जवाब में कहा, 'कुछ समूह इन शब्दों पर पुनर्विचार के लिए राय व्यक्त कर सकते हैं। इनसे सार्वजनिक चर्चा या माहौल बनता है, लेकिन यह सरकार का आधिकारिक रुख नहीं दर्शाता।' उन्होंने बताया कि 42वें संविधान संशोधन को चुनौती देने वाली

याचिकाएं सुप्रीम कोर्ट में नवंबर 2024 में खारिज हो चुकी हैं। बता दें कि आपातकाल के 50 साल होने पर आरएसएस के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने यह मुद्दा उठाया था। इसके बाद निवर्तमान उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने इसे संविधान का नासूर बताया था। दरअसल सेक्युलर और सोशलिस्ट शब्द 1976 में 42वें संशोधन के जरिए शामिल किए गए थे। इस दौरान देश में आपातकाल था। 25 जून 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा की थी। इससे पहले निवर्तमान उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 26 जुलाई को कहा था कि आपातकाल के दौर में संविधान की प्रस्तावना में संशोधन करके जोड़े गए।

देशभक्ति दिखाएं, गाजा की बजाय यहां ध्यान दें

- वामपंथी दल को मुंबई हाईकोर्ट ने दी मुफ्त की नसीहत

मुंबई (एजेंसी)। गाजा में इजरायल की ओर से किए जा रहे कथित नरसंहार के खिलाफ प्रदर्शन की अनुमति के लिए वामपंथी दल सीपीएम ने बॉम्बे हाई कोर्ट में याचिका दाखिल की थी। पार्टी को अदालत ने प्रदर्शन की अनुमति तो नहीं दी, लेकिन यह नसीहत जरूर दी कि हजारों मील दूर के किसी मसले की बजाय भारत के किसी मुद्दे पर ध्यान दे। सीपीएम की मांग थी कि उसे आजाद मैदान पर

प्रदर्शन की अनुमति दी जाए, जिससे मुंबई पुलिस ने इनकार कर दिया है। जस्टिस रविंद्र घुगे और गौतम अखंड की बेंच ने अर्जी को खारिज करते हुए कहा कि आपको हजारों मील दूर के किसी मसले की बजाय ऐसे मसलों पर ध्यान देना चाहिए, जिनका भारत पर असर होता हो। बेंच ने कहा, हमारे ही देश में तमाम मुद्दे हैं। हम ऐसा कुछ नहीं कहना चाहते हैं। मैं माफी चाहूंगा, लेकिन यह सही है कि आप लोगों की दूरदृष्टि नहीं है। आप लोग गाजा के मुद्दों को देख पा रहे हैं। फिलिस्तीन की चर्चा कर रहे हैं। अपने ही देश में देखिए। देशभक्त बनें।

दो दिन के दौरे पर मालदीव पहुंचे पीएम मोदी

- एयरपोर्ट पर राष्ट्रपति मुइज्जू ने किया जबरदस्त स्वागत
- 60वां स्वतंत्रता समारोह आज, मोदी होंगे मुख्य अतिथि

माले (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दो दिन के दौरे पर मालदीव पहुंच गए हैं। उनका स्वागत करने के लिए राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू लेने एयरपोर्ट पर पहुंचे। दोनों नेताओं ने एक दूसरे को गले भी लगाया। एयरपोर्ट पर पीएम मोदी के स्वागत में स्थानीय कलाकारों ने पारंपरिक नृत्य भी किया। मोदी ने यहां भारतीय समुदाय के लोगों से मुलाकात की और भारतीय मूल के बच्चों की डांस परफॉर्मेंस भी देखी। मोदी की यह तीसरी मालदीव यात्रा है। वे यहां मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू के न्योते पर आए हैं। इससे पहले मुइज्जू ने राष्ट्रपति चुनाव में इंडिया आउट का नारा दिया था। चुनाव जीतने के बाद दोनों देशों

के रिश्तों में खटास आ गई थी। हाल के दिनों में संबंधों में सुधार देखने को मिला है। मोदी 26 जुलाई को मालदीव के 60वें स्वतंत्रता समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इस दौरान भारत और मालदीव के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना के 60 साल पूरे होने का जश्न भी मनाया जाएगा। मोहम्मद मुइज्जू नवंबर 2023 में राष्ट्रपति बने थे, उसके बाद से किसी विदेशी नेता की पहली आधिकारिक यात्रा है। इस दौरान डिफेंस और रणनीतिक क्षेत्रों में कई समझौतों पर हस्ताक्षर होंगे। यह समझौते भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के तहत मालदीव के साथ विकास साझेदारी को और मजबूत करेंगे। मोदी इस यात्रा के दौरान मोदी भारत के सहयोग से तैयार कुछ प्रोजेक्ट का उद्घाटन भी कर सकते हैं।

राजस्थान के झालावाड़ जिले में दर्दनाक हादसा

- स्कूल की बिल्डिंग गिरने से आठ बच्चों की मौत, 27 घायल

छात्रा बोली-पहले कंकड़ गिरे, लेकिन टीचर ने ध्यान नहीं दिया

झालावाड़ (एजेंसी)। राजस्थान के झालावाड़ में सरकारी स्कूल की बिल्डिंग का हिस्सा गिरने से 8 बच्चों की मौत हो गई है, वहीं 28 घायलों में से 9 की हालत गंभीर हैं। मनोहरथाना ब्लॉक के पिपलोदी सरकारी स्कूल की क्लास में शुक्रवार सुबह बच्चे बैठे थे, तभी कमरे की छत ढह गई और 35 बच्चे दब गए थे। ग्रामीणों ने तत्काल मौके पर पहुंचकर मलबा हटाकर बच्चों को निकाला और अस्पताल में भर्ती कराया। मनोहरथाना हॉस्पिटल के अनुसार 5 बच्चों की मौत मौके पर ही हो गई थी, वहीं 3 ने इलाज के दौरान दम तोड़ा। हादसे को लेकर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दुख जताया है। गांववालों ने बताया कि वहां सुबह से बारिश हो रही थी। प्रार्थना का समय हुआ तो सभी क्लास के बच्चों को स्कूल के ग्राउंड में इकट्ठा करने की बजाय कमरे में बैठा दिया, ताकि वे भीगे नहीं। इसके कुछ देर बाद छत गिर गई और 35 बच्चे दब गए। गांववालों ने बताया कि इस स्कूल में कुल 7 क्लासरूम है। हादसे के दौरान स्कूल के क्लासरूम में 71 बच्चे थे। स्कूल में 2 टीचर भी मौजूद थे, लेकिन छत गिरने के वक्त बिल्डिंग से बाहर थे, वे सुरक्षित हैं। स्कूल में पढ़ने वाली बच्ची ने बताया की छत गिरने से पहले कंकड़ गिर रहे थे, बच्चों ने बाहर खड़े टीचर्स को इसकी जानकारी दी, लेकिन उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया।

राबड़ी ने सम्राट को बताया गुंडा, कहा-लड़कियों को छेड़ते हैं

विपक्ष के काले कपड़े को देख भड़के नीतिश, सदन में घाय-घाय के लगाए नारे

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानमंडल के मानसून सत्र के 5वें और आखिरी दिन लंच के बाद भी सदन में विपक्ष का हंगामा जारी रहा। सदन की कार्यवाही 7 मिनट के बाद स्थगित कर दी गई। ढाई बजे कार्यवाही फिर शुरू हुई। पहले सेशन में राबड़ी देवी ने सम्राट

चौधरी पर कहा कि वो बचपन से बोरिंग रोड इलाके में गुंडई करता है। बोरिंग रोड चौराहे पर लड़कियों को छेड़ते रहे। वो कैसे दूसरे को गुंडा बोल सकते हैं। गुरुवार को डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी ने सदन में तेजस्वी से कहा था-जिसका बाप अपराधी वो क्या बोलेगा। विधान परिषद में राबड़ी ने तेजस्वी की जान को खतरा बताया।

कांग्रेस शासित राज्यों में जाति-जनगणना कराएंगे राहुल गांधी

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी शुक्रवार को दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में पार्टी के ओबीसी सेल की तरफ से आयोजित भागीदारी न्याय सम्मेलन में शामिल हुए। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए

- कहा-पहले नहीं करा सके, यह कांग्रेस की नहीं सिर्फ मेरी गलती

कहा कि हम सभी कांग्रेस शासित राज्यों में जाति जनगणना, जनसंख्या का एक्स-रे कराएंगे। राहुल ने कहा, कांग्रेस पार्टी और मेरे काम में एक कमी रह गई। मुझे ओबीसी वर्ग की जिस तरह से रक्षा करनी थी, मैंने नहीं की। 10-15 साल पहले मुझे ओबीसी के मुद्दे गहराई से नहीं समझ आए थे। मुझे अगर उनके मुद्दे और परेशानियों का पता होता तो मैं उसी वक्त जातिगत जनगणना करवा देता। कांग्रेस सांसद ने कहा, हम पहले जाति जनगणना नहीं करा सके। यह कांग्रेस की नहीं, मेरी गलती थी। मैं अब इसे सुधार रहा हूं। आप मेरी बहन प्रियंका से पूछिएगा कि अगर राहुल ने किसी काम के लिए मन बना लिया तो उस बात को वो छोड़ेगा या नहीं। मैं नहीं छोड़ने वाला। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़ने ने सम्मेलन में कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी झूठों के सरदार हैं। झूठ बोलना उनका काम है। वे संसद में भी झूठ बोलते हैं। पीएम मोदी सिर्फ तकरीर (भाषण) करते रहते हैं। खुद कहते हैं कि मैं नॉन-बायोलॉजिकल हूं, मुझे भगवान ने भेजा है।

हिमाचल में पीएम मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट का विरोध

- प्रदर्शनकारी बोले-बिजली महादेव रोप-वे मंजूर नहीं
- कुल्लू-मंडी में सड़कों पर उतरे लोग, कंगना भी खिलाफ

कुल्लू (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट बिजली महादेव रोप-वे का हिमाचल में जबरदस्त विरोध हो रहा है। कुल्लू आज सैकड़ों लोग इस प्रोजेक्ट के खिलाफ सड़कों पर उतरे। प्रदर्शनकारी इस प्रोजेक्ट को नहीं लगाने की मांग कर रहे हैं। मंडी के सेरी मंच पर भी लोगों ने रोष रैली निकालकर इस प्रोजेक्ट का विरोध जताया। वहीं कुल्लू के रामशीला में एकत्र हुए लोगों ने ढालपुर मैदान तक आक्रोश रैली

निकाली। अब ढालपुर मैदान में प्रदर्शन कर रहे हैं। कुल्लू का ढालपुर ग्राउंड पूरी तरह पुलिस छावनी में तब्दील है। सांसद कंगना रनोट भी कुछ समय पहले एक कार्यक्रम में इस प्रोजेक्ट का विरोध कर चुकी हैं। तब कंगना ने कहा था कि कि यदि देव समाज के लोग नहीं चाहते तो यह प्रोजेक्ट बंद होना चाहिए, क्योंकि उनके लिए देवता का आदेश आधुनिकीकरण से ज्यादा जरूरी है।

संसद गेट पर राहुल-प्रियंका ने एसआईआर लिखे पोस्टर फाड़े

- डस्टबिन में डाले, लोकसभा स्पीकर ने सर्वदलीय बैठक बुलाई

28 जुलाई से सदन चलाने पर पक्ष और विपक्ष में बनी सहमति

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के मानसून सत्र के पांचवें दिन विपक्ष ने बिहार वोटर वेरिफिकेशन मुद्दे पर संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। विपक्षी सांसदों ने गांधी प्रतिमा से लेकर मकर द्वार (नए संसद भवन का एंट्री गेट) तक पैदल मार्च निकाला। इसमें राहुल गांधी, प्रियंका गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे भी शामिल हुए। मकर द्वार पहुंचने पर राहुल-प्रियंका सहित विपक्ष के सांसदों ने स्पेशल इन्टेंसिव रिवीजन लिखे पोस्टर फाड़े। उन्हें प्रतीकात्मक डस्टबिन में डाला। साथ ही मोदी सरकार हाय-हाय के नारे लगाए। लोकसभा में भी विपक्ष ने नारेबाजी की। सदन में करीब 20 मिनट ही कार्यवाही चल

पाई। स्पीकर ओम बिरला ने सर्वदलीय बैठक बुलाई। 28 जुलाई से सदन सुचारू रूप से चलाने पर सहमति बन गई है। इसी दिन ऑपरेशन सिंदूर पर भी चर्चा होगी। राज्यसभा के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, वे (केंद्र) गरीबों को उनके मतदान के अधिकार से वंचित करना चाहते हैं और केवल एलीट क्लास को वोट देने देना चाहते हैं... वे (केंद्र सरकार) संविधान का पालन नहीं कर रहे हैं। एसआईआर के खिलाफ हमारी लड़ाई जारी रहेगी। विपक्ष के हंगामे के बीच लोकसभा की कार्यवाही को 28 जुलाई तक स्थगित कर दिया गया है। सोमवार को लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा होगी। बहस के लिए 16 घंटे का समय निर्धारित किया गया है।

आरओ और एआरओ का ऐलान, तैयारियां भी तेज

उपराष्ट्रपति चुनाव को लेकर ऐक्टिव हुआ चुनाव आयोग

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति चुनाव को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। चुनाव आयोग ने उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए रिटर्निंग अधिकारियों और सहायक रिटर्निंग अधिकारियों की नियुक्ति की है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के अचानक इस्तीफे के बाद नए उपराष्ट्रपति का चुनाव

मॉनसून सत्र के बाद ही होने की संभावना है। चुनाव में कुछ प्रक्रियाएं होती हैं, इसलिए समय लगेगा। चुनाव आयोग संसद के दोनों सदनों की मतदाता सूची की जांच कर रहा है। राज्यसभा के महासचिव चुनाव के रिटर्निंग ऑफीसर होंगे। चुनाव आयोग की अधिसूचना के बाद चुनाव प्रक्रिया 60 दिनों में पूरी करनी होगी। नियमों के अनुसार नामांकन पत्र दाखिल करने के लिए 14 दिन, फिर जांच के लिए तीन-चार दिन और प्रचार के लिए 14 दिन मिलेंगे।

भारी बारिश से पानी-पानी हो गई है मुंबई नगरिया

- सड़कों और गलियों से लेकर घरों तक में भर गया पानी
- पश्चिम बंगाल में बिजली गिरने से 13 लोगों की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई और आसपास के जिलों में भारी बारिश जारी है। इसके चलते पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर लोगों से जरूरत न होने पर घर से न निकलने की सलाह दी है। समुद्र तटीय इलाकों में जाने से बचने को भी कहा है। मौसम विभाग ने गुरुवार को महाराष्ट्र समेत पांच राज्यों में बारिश का रेड अलर्ट जारी किया था। वहीं, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक में ऑरेंज अलर्ट है। पश्चिम बंगाल के बांकुड़ा और पूर्व बर्धमान जिले में गुरुवार को बिजली गिरने से 13 लोगों की मौत हो गई। वहीं, ओडिशा पुलिस ने गंधमर्दन पहाड़ियों पर फंसे 17 पर्यटकों का रेस्क्यू किया गया। हिमाचल प्रदेश के मंडी में सड़क धंसने से एक बस हादसे का शिकार हो गई। इसमें 7 लोगों की मौत हो गई। राज्य में अब तक कुल 147 मौतें हो चुकी हैं। वहीं, 1387 करोड़ रुपए की संपत्ति को नुकसान पहुंचा है। मौसम विभाग ने बंगाल की खाड़ी, पश्चिम बंगाल और ओडिशा के मछुआरों को समुद्र में न जाने की सलाह दी है। विभाग ने कहा कि 28 जुलाई तक इन क्षेत्रों में 55 एमएम की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं। जल शक्ति मंत्रालय ने गुरुवार को कहा कि केंद्रीय जल आयोग की तरफ देशभर के 350 बाढ़ फोरकास्ट स्टेशनों पर एआई का उपयोग करके 24 घंटे पहले तक पूर्वानुमान जारी किए जाते हैं। जल शक्ति राज्य मंत्री राज भूषण चौधरी ने कहा कि ये पूर्वानुमान एक नई पहल के तहत तैयार और प्रसारित किए जाते हैं। यह तकनीक स्मार्ट वाटर रिसोर्सेज मॉडलिंग ऑर्गनाइजेशन-सेंटर ऑफ एक्सीलेंस पर काम करती है। बिहार के नवादा जिले में भारी बारिश की वजह से सदर अस्पताल के कई हिस्सों में पानी भर गया है। मरीज और उनके तीमारदारों को पानी के बीच से इलाज गुजरना पड़ रहा है। बिहार में कमजोर मानसून की वजह से अच्छी बारिश नहीं हो रही है।

मैं मराठी नहीं बोलूंगा, ऐसा यहां नहीं चलेगा

- महाराष्ट्र में भाषा विवाद पर अब अजित पवार भी कूदे

डिप्टी सीएम ने कहा-मराठी का अपमान नहीं होना चाहिए

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में भाषा विवाद पर जहां राज ठाकरे की अगुवाई वाली मनसे और उद्धव ठाकरे की शिवसेना यूबीटी खुलकर मैदान में मराठी अस्मिता कार्ड खेल रहे हैं। हिंदी-मराठी संग्राम पर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के प्रमुख और डिप्टी सीएम अजित पवार ने पहली बार बयान दिया है। पवार ने कहा है कि मैं मराठी नहीं बोलूंगा, महाराष्ट्र में ऐसा नहीं चलेगा। गौरतलब हो कि राज ठाकरे की मनसे के कार्यकर्ताओं द्वारा अभी तक कई लोगों को

पीटा जा चुका है। मनसे कहा कहना कि मराठी नहीं बोलने पर पिटाई नहीं हो रही है बल्कि मराठी का अपमान करने पर सबक सिखाया जा रहा है। महायुति सरकार में डिप्टी सीएम अजित पवार ने कहा कि महाराष्ट्र में मराठी के अपमान को सहन नहीं किया जाएगा। उन्होंने कि सभी भाषाओं की इज्जत करें। पवार ने यह भी कहा कि मराठी बोलने की कोशिश करें। पवार ने मीडिया से बातचीत में कहा कि महाराष्ट्र में बाहरी लोगों से मराठी में बात की उम्मीद नहीं की जाती है।

मोदी की मालदीव यात्रा से हिंद महासागर में फिर मजबूत हुई भारत की पकड़, चीन की बेचैनी बढ़ी

नीरज कुमार दुबे

मोदी की मालदीव यात्रा से पड़ने वाले असर को देखें तो इस ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब भी मालदीव की रणनीतिक प्राथमिकता है। साथ ही श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश जैसे पड़ोसी भी देख रहे हैं कि भारत बिना धमकाए, बिना ऋणजाल के, सहयोग और स्थिरता का मार्ग प्रस्तुत करता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मालदीव यात्रा केवल एक औपचारिक राजकीय दौरा नहीं है, बल्कि यह दक्षिण एशिया की भू-राजनीतिक बिसात पर भारत की चतुर कूटनीति, रणनीतिक धैर्य और नेतृत्व क्षमता का स्पष्ट प्रदर्शन भी है। यह यात्रा इस प्रश्न का उत्तर भी है– कि कैसे भारत ने 'चीन की गोद में जाते' मालदीव को फिर से अपने पक्ष में मोड़ लिया।

हम आपको याद दिला दें कि 2023 में जब मोहम्मद मुइज्ज़ू सत्ता में आए, तो उन्होंने खुलकर "India Out" अभियान का समर्थन किया और भारतीय सैन्य उपस्थिति पर सवाल उठाए। उनकी शुरूआती विदेश यात्राएं भी संकेत दे रही थीं कि मालदीव अब चीन के करीब जा रहा है। लेकिन भारत ने जल्दबाजी में कोई कड़ा कदम नहीं उठाया। इसके विपरीत, उसने "Engagement over Escalation" (संवाद, न कि टकराव) की नीति अपनाई। भारत ने रक्षा कर्मियों को तकनीकी विशेषज्ञों से बदला, जिससे मालदीव की 'संप्रभुता' की चिंता को दूर किया गया, लेकिन रणनीतिक उपस्थिति बनाए रखी गई। साथ ही विकास परियोजनाओं को बिना शोर के आगे बढ़ाया गया जिससे आम जनता को भारत की भूमिका का सकारात्मक प्रभाव दिखता रहा। इसके अलावा, आर्थिक मदद जैसे 30 अरब रुपये की ऋण सुविधा, करेंसी स्वैप और ट्रेजरी बिलों से मालदीव की डूबती अर्थव्यवस्था को सहारा दिया गया। साथ ही सांस्कृतिक, राजनीतिक और पार्टी-स्तरीय जुड़ाव को फिर से शुरू किया गया, जिससे भारत और मालदीव के बीच बहुस्तरीय संपर्क बने रहें।

इसके अलावा, 2024-25 में भारत ने नई परियोजनाएं घोषित करने की बजाय पूर्ववर्ती विकास कार्यक्रमों को तेजी से पूरा करने पर ध्यान केंद्रित किया। हनीमाधू अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और ग्रेटर माले कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट जैसे विशाल निर्माण कार्य इसके उदाहरण हैं। इनका न केवल आर्थिक, बल्कि रणनीतिक महत्व भी है क्योंकि ये चीन समर्थित बंदरगाह-राजनीति के विकल्प प्रस्तुत करते हैं।

देखा जाये तो भारत की नीति में जबरदस्त कूटनीतिक परिपक्वता थी। भारत ने मुइज्ज़ू की ओर से उकसाने के बावजूद भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि दीर्घकालिक रणनीतिक सोच के साथ अपने कदम आगे बढ़ाये। प्रधानमंत्री मोदी जब मालदीव पहुँचे तो उनके स्वागत के

लिए उमड़ी जनता और अगवानी के लिए पहुँचे मुइज्ज़ू की खुशी देखने लायक थी। हम आपको बता दें कि मालदीव जैसे राष्ट्र में यह परंपरा नहीं रही कि राष्ट्रपति स्वयं एयरपोर्ट पर किसी राष्ट्राध्यक्ष की अगवानी करें। मुइज्ज़ू का प्रधानमंत्री मोदी को हवाई अड्डे पर व्यक्तिगत रूप से रिसीव करना कई गहरे संदेश देता है। जैसे- यह "India Out" अभियान से पूरी तरह यू-टर्न है। अब राष्ट्रपति खुद भारत के सर्वोच्च नेता के स्वागत में खड़े हैं। इसके अलावा, मुइज्ज़ू यह दिखाना चाहते हैं कि अब भारत के साथ सहयोग राष्ट्रहित में है। यह संकेत देशवासियों के लिए है कि भारत शत्रु नहीं, सहायक है। यह कूटनीतिक संकेत भी है कि भारत, अब भी मालदीव की विदेश नीति में सर्वोपरि है, चाहे चीन ने कितनी भी कोशिश की हो।

इसके अलावा, मालदीव की राजधानी माले में, भारत की मदद से बने रक्षा मंत्रालय भवन पर प्रधानमंत्री मोदी की तस्वीर प्रदर्शित होना भी अपने आप में महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। यह न केवल भारत की रक्षा सहायता की स्थायित्व को दशार्ता है, बल्कि यह मालदीव की जनता को दिखाता है कि चीन कर्ज देता है लेकिन भारत सुरक्षा और स्थिरता देता है। देखा जाये तो यह भारत की Soft Power की जीत है, जो किसी भी सैन्य हथियार या बंदरगाह समझौते से अधिक प्रभावशाली साबित हुई है।

मोदी की मालदीव यात्रा से पड़ने वाले असर को देखें तो इसने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब भी मालदीव की रणनीतिक प्राथमिकता है। साथ ही श्रीलंका, नेपाल, बांग्लादेश जैसे पड़ोसी भी देख रहे हैं कि भारत बिना धमकाए, बिना ऋणजाल के, सहयोग और स्थिरता का मार्ग प्रस्तुत करता है। इसके अलावा, मालदीव की भौगोलिक स्थिति हिंद महासागर की व्यापक सामरिक निगरानी के लिए महत्वपूर्ण है। मोदी की यात्रा के बाद भारत की मौजूदगी और वैधता वहाँ स्थिर और वैधानिक हो गई है– यह चीन के लिए एक रणनीतिक अवरोध है।

हम आपको बता दें कि यह पहली बार है जब कोई भारतीय प्रधानमंत्री गैर-MDP सरकार द्वारा आमंत्रित होकर स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय पर्व पर 'मुख्य अतिथि' बना है। यह न केवल आपसी सम्मान का परिचायक है, बल्कि यह भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति की सफलता का भी प्रमाण है। साथ ही प्रधानमंत्री मोदी की यह राजकीय यात्रा किसी शासनाध्यक्ष की पहली राजकीय यात्रा भी है, जिसकी मेजबानी राष्ट्रपति मुइज्ज़ू नवंबर 2023 में पदभार ग्रहण करने के बाद से कर रहे हैं। हम आपको यह भी बता दें कि मालदीव में एक परम्परा रही है कि नया राष्ट्रपति बनने वाला व्यक्ति पहला दौरा भारत का करता है लेकिन मुइज्ज़ू ने सबसे पहला दौरा तुर्की का किया था उसके बाद वह संयुक्त अरब अमीरात गये थे। उसके बाद उन्होंने चीन की बहुप्रचारित यात्रा भी की थी लेकिन उन्हें जब दूसरों के कर्ज जाल और भारत की निस्वार्थ मदद के बीच का अंतर समझ आया तो पिछले साल उन्होंने दो बार भारत का दौरा किया था और अब उन्होंने अपने कार्यकाल में किसी विदेशी राष्ट्राध्यक्ष को राजकीय यात्रा पर आमंत्रित किया तो वह भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं।

इस तरह देखा जाये तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मालदीव यात्रा एक प्रतीकात्मक ही नहीं, बल्कि रणनीतिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। यह यात्रा न केवल द्विपक्षीय संबंधों में आई खटास के बाद एक 'रीसेट' का संकेत देती है, बल्कि यह दिखाती है कि भारत किस तरह अपने पड़ोसी देशों के साथ रिश्तों को दीर्घकालिक दृष्टि से संभालता है।

बहरहाल, प्रधानमंत्री मोदी की यह यात्रा न केवल 60 वर्षों के द्विपक्षीय संबंधों का उत्सव है, बल्कि आने वाले दशकों की दिशा भी तय करती है। भारत और मालदीव के संबंध अब केवल सांस्कृतिक और ऐतिहासिक साझेदारी नहीं हैं– वे समुद्री सुरक्षा, विकास, और क्षेत्रीय संतुलन के मजबूत स्तंभ बनते जा रहे हैं। यह यात्रा एक स्पष्ट संकेत देती है कि भारत, आलोचना से विचलित हुए बिना, अपने पड़ोस में स्थिरता और सहयोग के लिए प्रतिबद्ध है। और यही किसी भी परिपक्व वैश्विक शक्ति की सबसे बड़ी पहचान होती है।

संपादकीय

सवाल भारत की साख का

भारतीय खिलाड़ियों में जैसी क्षमता दिखती है, उससे उम्मीद है कि देश वैश्विक खेल परिदृश्य में महत्त्वपूर्ण स्थान बना लेगा। मगर इसके बरक्स जिस तरह डोपिंग के मामले बढ़ रहे हैं, वह चिंता का विषय है। गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 2036 ओलंपिक की दावेदारी के लिए भारतीय प्रतिनिधिमंडल के दौरे के समय अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक परिषद ने डोपिंग में देश के खराब रिकार्ड पर चिंता जताई है। दरअसल, भारत पिछले महीने विश्व डोपिंग रोधी एजंसी के 2023 के जांच आंकड़ों में उन देशों में शीर्ष पर था, जिन्होंने पांच हजार या उससे ज्यादा नमूनों की जांच कराई थी, जबकि इसमें प्रतिबंधित पदार्थों का फीसद 3.8 दर्ज किया गया। ज्यादातर खेलों में डोपिंग की समस्या है। मगर दौड़ और कुश्ती में यह निराशाजनक है। राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजंसी की निलंबित खिलाड़ियों की सूची बताती है कि अन्य खेलों के मुकाबले कुश्ती में डोपिंग के सबसे अधिक उन्नीस मामले हैं। इनमें अगर पांच खिलाड़ी नाबालिग हैं, तो इससे साफ है कि उन्हें उचित मार्गदर्शन नहीं मिला और उन्होंने गलत कदम उठा लिया। लिहाजा अब यह सोचना होगा कि ऐसे खिलाड़ी सिर्फ खेल भावना के साथ देश के लिए खेलें और कुछ भी ऐसा न करें, जिससे उनके भविष्य पर प्रतिकूल असर पड़े। कोई भी कामयाबी आत्मविश्वास और अनुशासन से ही मिलती है। हमारे खिलाड़ियों ने कड़ी मेहनत और लक्ष्य का संधान कर भारत का गौरव बढ़ाया है। मगर जल्द से जल्द शोहरत-सम्मान पाने की भूख चंद खिलाड़ियों को गलत रास्ते पर ले जा रही है। यह सही है कि किसी भी प्रतियोगिता में खिलाड़ी पदक के दावेदार के तौर पर सामने आते हैं, लेकिन विजेताओं को आर्थिक लाभ के साथ सरकारी नौकरियां मिलने से उनकी मानसिकता पर असर पड़ा है। दूसरी ओर उन्हें गुमराह करने वाले भी मिल जाते हैं। नतीजा यह है कि जानते-बूझते हुए भी वे गलत राह अपना लेते हैं। ऐसे में कोच का भी दायित्व है कि वे खिलाड़ियों के भीतर जागरूकता पैदा करें। फिलहाल एक बड़ा कदम भारतीय ओलंपिक संघ की कार्यकारी परिषद ने उठाया है। उसने एक पैनल का गठन कर स्पष्ट कर दिया है कि ऐसे मामले बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे।

चिंतन-मनन

व्यक्तिगत चेतना का विस्तार

दूसरों के सुख-दुख का भागी बनने से हमारी व्यक्तिगत चेतना विकसित होकर विश्व चेतना बन जाती है। समय के साथ जब ज्ञान की वृद्धि होती है, तब उदासीनता संभव नहीं। तुम्हारा आंतरिक स्रोत ही आनन्द है।अपने दुःख को दूर करने का उपाय है विश्व के दुख में भागीदार होना और अपनी खुशी को बढ़ाने का उपाय है विश्व के आनन्द में सहभागी होना। जब सभी लोग इस विचार से आएंगे कि वे समाज को अपना क्या योगदान दें, तो वह दैवी समाज होगा।हम सबको अपनी व्यक्तिगत चेतना को शिक्षित और शिष्ट करना है ताकि समय के साथ ज्ञान की वृद्धि हो, परिवर्तन आए। यदि ध्यान में तुम्हें गहन अनुभव न हो रहे हों तो और सेवा करो- ध्यान में अधिक गहराई आएगी।ध्यान तुम्हारी मुस्कान वापस लाता है। कई व्यक्ति सेवा करना छोड़ देते हैं जब वे अपनी छवि, प्रतिष्ठा, सम्मान, सुविधा और आराम को लक्ष्य की प्राप्ति से अधिक महत्व देने लगते हैं। कई बार लोग सेवा से कतराने लगते हैं, जब उन्हें कोई पद नहीं मिलता या जब वे अपमानित महसूस करते हैं। जब उन्हें अपेक्षानुसार कम मिलता है या जब वे लक्ष्य की प्राप्ति को चुनौती न समझकर संघर्ष समझते हैं। इसीलिए, संसार में कुछ ही लोग लक्ष्य तक पहुंचने में कामयाब होते हैं।

जब ऐसा कुछ करना है जो तुम नहीं कर सकते, तब विश्राम नहीं कर सकते और तब भी विश्राम नहीं कर सकते जब लगता है कि तुम्हें वह बनना है जो तुम नहीं हो। ऐसा कुछ नहीं करना जो तुम नहीं कर सकते। तुमसे वह देने के लिए नहीं कहा जाएगा जो तुम नहीं दे सकते। जितना तुम कर सकते हो, केवल वही तुम्हारे हिस्से की सेवा है।यह समझ गहरा विश्राम देती है। यदि तुममें आकांक्षा या आलस्य है, तुम विश्राम नहीं कर सकते।दोनों ही गहरे विश्राम के विरुद्ध हैं। एक आलसी व्यक्ति रात भर करवटें बदलेगा, बेचैन रहेगा और एक आकांक्षी व्यक्ति अंदर ही अंदर जलेगा।गहन विश्राम तुम्हारी कलाओं और योग्यताओं को उभारता है और तुम्हें अपने स्वरूप के समीप लाता है।थोड़ा सा भी यह आभास कि ईश्वर तुम्हारे साथ है, गहरा विश्राम लाता है।प्रार्थना, प्रेम तथा ध्यान गहन विश्राम के विशिष्ट रस हैं।

मुंबई लोकल ट्रेन बम धमाकों का फैसला और उठते सवाल

ललित गर्ग

जुलाई 11- 2006 को मुंबई की भीड़भरी लोकल ट्रेनों में हुए सीरियल बम धमाकों ने समूचे देश को झकझोर कर रख दिया था। पीडित परिवारों के साथ-साथ जन-जन को आहत किया था। 7 जगहों पर हुए इन धमाकों में 187 निर्दोष लोगों की जान गई और 824 से ज्यादा लोग घायल हुए। यह भारत के सबसे बड़े आतंकी हमलों में से एक था। लेकिन इन बम धमाके को लेकर सोमवार को बॉम्बे हाईकोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाया, कोर्ट ने विशेष मकोका अदालत की ओर से 12 अभियुक्तों को दी गई सजा को गैरकानूनी करार दिया। इन सभी आरोपियों का बरी हो जाना सवाल के साथ-साथ चिन्ता भी पैदा करता है। इसीलिये करीब 19 साल बाद आए अदालत के इस फैसले को लेकर न केवल कानूनी दायरे में, बल्कि सामाजिक व नैतिक दृष्टिकोण से भी कई सवाल खड़े हो रहे हैं। क्योंकि बॉम्बे हाई कोर्ट के इस फैसले के बाद सवाल वहीं घूमकर आ जाता है कि इतने बड़े नुकसान का दोषी कौन है?

लम्बी न्यायिक प्रक्रिया एवं जांच के बाद 2015 में मुंबई की विशेष मकोका अदालत ने 12 अभियुक्तों को दोषी करार दिया, जिसमें से 5 को फांसी और 7 को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। यह फैसला लगभग 8 वर्षों की सुनवाई, 250 से ज्यादा गवाहों और हजारों पन्नों की गवाही के बाद आया। लेकिन 2023 और फिर 2025 में कुछ सिविल सोसाइटी संगठनों, मानवाधिकार समूहों और कुछ कानूनी विशेषज्ञों ने फैसले पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि कुछ दोषियों को पर्याप्त सबूतों के बिना फंसाया गया, पुलिस की जांच पक्षपातपूर्ण रही और कई जगह कानून के दायरे का अतिक्रमण किया गया। इसी को आधार बनाकर हाईकोर्ट में जिस तरह से एक-एक करके सारे सबूतों की धज्जियां उड़ायी, उससे पूरे सिस्टम को लेकर संदेह उठता है। जब इतने अहम मामले में इतनी लचर एवं लापरवाहीपूर्ण जांच हुई, तो फिर दूसरे तमाम केस में क्या होता होगा? गवाहों के बयान दर्ज करने से लेकर सबूत जुटाने तक, हर जगह लापरवाही एवं कौताही बरती गई।

कानून की दृष्टि में अपराध केवल घटना नहीं, उस घटना के पीछे की मंशा, सबूतों की पुष्टि, प्रक्रिया की शुद्धता और निष्पक्षता का भी मूल्यांकन करता है। ह्लदोषी को सजा मिलनी चाहिएह्व-यह एक सार्वभौमिक सिद्धांत है, लेकिन ह्लनिर्दोष को दंड न मिलेह्व-यह उससे भी अधिक महत्वपूर्ण नैतिक सिद्धांत है। भारतीय दंड संहिता, मकोका और गैरकानूनी गतिविधियाँ रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) जैसे सख्त कानून आतंकवाद से निपटने के लिए बनाए गए, लेकिन इनका उपयोग अक्सर राजनीतिक प्रभाव, मीडिया ट्रायल, या जनभावनाओं को शांत करने के लिए किया गया है। ट्रेनों में हुए सीरियल बम धमाकों के मामले में अनेक ज्वलंत सवाल खड़े हुए हैं कि क्या सभी दोषियों को वास्तव में पर्याप्त प्रमाणों के आधार पर दोषी ठहराया गया है? यदि नहीं, तो यह न्याय व्यवस्था के लिए एक गंभीर प्रश्न है। क्या पुलिस या जांच एजेंसियों ने निष्पक्ष जांच की? कई बार जांच एजेंसियों पर ह्यनतीजे पहले, जांच बाद मेंह्व का आरोप लगा है। क्या विशेष अदालतों का गठन निष्पक्ष सुनवाई सुनिश्चित करता है या त्वरित दंड की नीति अपनाता है? क्या कानून केवल सख्ती का पर्याय बन गया है या उसमें मानवीय संवेदना का स्थान है? क्या मीडिया ट्रायल ने वास्तविक न्याय को प्रभावित किया? इन प्रश्नों के उत्तर मिलना ही चाहिए।

देश के सामने आतंकवाद के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की चुनौती है, तो वहीं न्याय की नैतिकता बनाए रखने की भी जिम्मेदारी है। अगर कानून का इस्तेमाल अन्याय के लिए किया गया, तो आतंकवाद के खिलाफ जंग की नैतिकता ही सवालों में पड़ जाएगी। न्याय केवल प्रतिशोध नहीं, बल्कि नैतिक और विधिसम्मत संतुलन का नाम है। जो निर्दोष है, उसे दोषमुक्त करना और जो दोषी है, उसे यथोचित दंड देना- यही कानून का आदर्श उद्देश्य है। मुंबई बम धमाके जैसी वीभत्स घटनाएं देश के लिए चुनौती हैं, लेकिन इन चुनौतियों से निपटने के नाम पर अगर हम न्याय और कानून के मूलभूत सिद्धांतों से समझौता करते हैं, तो हम एक असुरक्षित और अन्यायपूर्ण समाज की नींव रखेंगे। आवश्यक है कि न्याय केवल न्यायालयों की प्रक्रिया न रहे, वह जनविश्वास का प्रतीक बने। एक बड़ा सवाल है कि न्याय व्यवस्था पर भरोसा कैसे बना रहे? इसके लिये जरूरी है कि जांच प्रक्रिया पारदर्शी हो, आरोपों की पुष्टि डिजिटल और वैज्ञानिक सबूतों से हो। अदालतें किसी दबाव, राजनीतिक प्रभाव या जनभावना से परे निर्णय लें। न्याय में देरी भी अन्याय है, लेकिन जल्दबाजी में न्याय भी गलत निर्णय की आशंका बढ़ाता है। सभी मामलों में उच्च न्यायालय व सर्वोच्च न्यायालय में स्वतंत्र और निष्पक्ष पुनरावलोकन की व्यवस्था रहे। निचली अदालते हो या सर्वोच्च अदालते- न्यायिक फैसलों का बदलना न्यायिक प्रक्रिया की विश्वसनीयता एवं निष्पक्षता के लिये गंभीर चुनौती है। ऐसे अनेक मामले हैं जिनमें निचली अदालतों में दिये गये मौत की सजा को ऊपरी अदालतों ने बदल दिया। जांच में खामियों, गवाही में कमी और कमजोर सबूतों के चलते ऊपर की अदालतों में केस खारिज होते हुए बार-बार देखे गये हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने हाल में एक आरोपी की मौत की सजा को खारिज करते हुए कहा कि ह्यजब दांव पर इंसानी जिंदगी लगी हो और उसकी कीमत खून हो, तो मामले को पूरी ईमानदारी से देखा जाना चाहिए।ह्व दुर्भाग्य से मुंबई की लोकल ट्रेनों में हुए सीरियल बम ब्लास्ट की जांच में इस भावना का सही से पालन नहीं किया गया। इस मामले में सभी आरोपियों का बरी हो जाना न केवल न्याय प्रक्रिया पर बल्कि जांच एजेंसियों पर सवाल पैदा करता है। प्रश्न है कि अगर 12 लोग निर्दोष थे तो इतने बरसों तक आतंकी होने का दाग लिए जिल्लत की जिंदगी क्यों जीते रहे? अगर ये दोषी थे तो जांच इतनी कमजोर क्यों हुई? यह केस निचली अदालतों के कामकाज के तरीकों पर भी बड़ा सवालिया निशान है। सबूतों को लेकर इतने संदेह थे, लेकिन निचली अदालत ने उन पर गौर नहीं किया। यह विडम्बनापूर्ण एवं हमारी न्याय प्रक्रिया की विसंगति ही है। यह पहला मामला नहीं, जहां जांच में खामियों, गवाही में कमी और कमजोर सबूतों के चलते ऊपर की अदालतों में केस खारिज हो गया हो। कलकत्ता हाईकोर्ट ने पिछले हफ्ते तीन लोगों की मौत की सजा रद्द करते हुए उन्हें हत्या के आरोपों से बरी कर दिया था। पिछले ही हफ्ते सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों की बेंच ने भी 2011 में हुई दोहरी हत्या और रेप के आरोपी को छोड़ने का आदेश दिया। शीर्ष अदालत ने जांच में गंभीर कमियां गिनाई थीं। इसी दौरान सुप्रीम कोर्ट ने सुझाव दिया था कि झूठे मुकदमों की वजह से जिन्हें लंबा समय जेल में बिताना पड़ा है, उन्हें मुआवजा देने के लिए कानून बनाने पर विचार करना चाहिए। अब मुंबई लोकल ट्रेन ब्लास्ट केस को लेकर महाराष्ट्र सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। महाराष्ट्र सरकार लोकल ट्रेन बम धमाके में आरोपियों को निर्दोष छोड़ने के बॉम्बे हाई कोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देते हुए अपील दायर की है।...

कारगिल युद्ध के नायकों के शौर्य और वीरता को नमन

योगेश कुमार गोयल

जुलाई 26 को देश कारगिल विजय दिवस की 26वीं वर्षगांठ मनाएगा। भारतीय सेना ने 26 जुलाई 1999 को कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी फौज को बुरी तरह धूल चटाई थी। भारत-पाकिस्तान के बीच जम्मू कश्मीर के कारगिल जिले में हुआ वह युद्ध 60 दिनों तक चला था और पाकिस्तान फौज की करारी शिकस्त के बाद 26 जुलाई 1999 को समाप्त हुआ था। पाकिस्तान पर भारत की इस जीत को याद करते हुए 26 जुलाई को ह्यकारगिल विजय दिवसह्व के रूप में मनाया जाता है। पाकिस्तानी सैनिकों और भाड़े के आतंकवादियों को मारकर या खदेड़कर कारगिल की चोटियों पर कब्जा करने के लिए चलाए गए 'ऑपरेशन विजय' के तहत तमाम बाधाओं को पार करते हुए हमारे वीर जांबाजों ने उन्हें कारगिल से खदेड़कर दुर्गम चोटियों पर जीत का परचम लहराया था लेकिन देश को इसकी बहुत भारी कीमत भी चुकानी पड़ी थी। दरअसल उस युद्ध में भारत को विजय दिलाने में भारतीय सेना के सैंकड़ों जवान शहीद हुए थे। कारगिल युद्ध में न केवल भारतीय सेना के 527 सैनिक शहीद हुए थे बल्कि दो महीने तक चले उस युद्ध के दौरान 453 आम नागरिक भी मारे गए थे। इसीलिए भारतीय सेना की उस विजय के बाद सरकार द्वारा प्रतिवर्ष 26 जुलाई को भारतीय सेना के शौर्य दिवस के रूप में कारगिल विजय दिवस मनाए जाने का फैसला लिया गया। सही मायनों में कारगिल विजय दिवस भारतीय सैनिकों के साहस और बलिदान को स्मरण करने तथा उनके बलिदान को सम्मान देने का दिन है और 26 जुलाई का दिन विशेष रूप से देश के इन्हीं वीर सपूतों को समर्पित है। देश के जन-जन तक कारगिल युद्ध के इन्हीं नायकों के शौर्य और पराक्रम की गाथा पहुंचाने के लिए ही यह दिवस मनाया जाता है।

1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद पहली बार कारगिल युद्ध हुआ था, जब दोनों देश सीधे तौर पर सैन्य संघर्ष में शामिल हुए थे। कारगिल युद्ध भारतीय सीमा क्षेत्र में पाकिस्तानी सैनिकों और कश्मीरी आतंकवादियों की घुसपैठ का ही परिणाम था। उस भीषण युद्ध में वायु शक्ति, तोपखाने और पैदल सेना के संचालन का व्यापक उपयोग किया गया था। युद्ध की खास बात यह थी कि वह युद्ध काफी ऊंचाई पर लड़ा गया था, जिसमें कुछ सैन्य चौकियां तो 18 हजार फुट से भी ज्यादा ऊंचाई पर स्थित थी। ऐसे में भारतीय सैनिकों के लिए वह लड़ाई बेहद चुनौतीपूर्ण थी लेकिन हमारे जांबाजों ने देश की आन-बान और शान के लिए अपने प्राणों की आहूति देकर न केवल पाकिस्तान को उसकी असली औकात दिखाई बल्कि 700 से भी ज्यादा पाकिस्तानी सैनिकों को मौत के घाट भी उतारा। दुश्मन को रणनीतिक स्थानों से हटाने के लिए महत्वपूर्ण हवाई हमले करते हुए भारतीय वायुसेना ने उस युद्ध के दौरान बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। भारतीय सेना ने युद्ध के दौरान टोलोलिंग, टाइगर हिल, प्वाइंट 4875 सहित अन्य रणनीतिक चोटियों पर फिर से कब्जा कर लिया था।

कारगिल युद्ध की शुरूआत 26 मई 1999 को भारतीय सेना के हवाई हमले के साथ हुई थी। दरअसल भारतीय सेना को 3 मई 1999 को कारगिल में स्थानीय चरवाहों द्वारा पाकिस्तानी सैनिकों और आतंकवादियों के बारे में सतर्क किया गया था और उसके दो ही दिन बाद 5 मई 1999 को पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सेना के कम से कम 5 जवानों को मार डाला था। उसके बाद 10 मई 1999 को भारतीय सेना द्वारा ह्यऑपरेशन विजयह्व की शुरूआत की गई। उस दौरान कारगिल में पाकिस्तानी सेना ने भारतीय सेना के गोला-बारूद भंडार को निशाना बनाया। 26 मई को भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सैनिकों पर हवाई हमला किया। 27 मई को भारतीय वायुसेना का एक मिग-27 गिर गया, जिसमें चार क्रू सदस्यों की मौत हो गई लेकिन विमान से बाहर निकलने वाले पायलट को पाकिस्तानी सैनिकों ने युद्धबंदी के रूप में पकड़ लिया। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 31 मई 1999 को घोषणा की कि कारगिल में युद्ध जैसी स्थिति है, जिसके बाद अमेरिका, फ्रांस सहित कुछ देशों ने अगले ही दिन भारत के खिलाफ सैन्य कार्रवाई के लिए पाकिस्तान को जिम्मेदार ठहराया। भारतीय सेना ने 5 जून 1999 को कुछ महत्वपूर्ण दस्तावेज जारी किए, जिनसे पूरी दुनिया के समक्ष पाकिस्तान की करतूत का खुलासा हुआ।

भारतीय सेना ने 9 जून 1999 को कारगिल के बटालिक सेक्टर में दो महत्वपूर्ण ठिकानों पर कब्जा कर लिया। अगले ही दिन पाकिस्तान ने जाट रेजिमेंट के 6 सैनिकों के शव क्षत-विक्षत हालत में भारत को लौटाए। 13 जून 1999 को भारत ने युद्ध की दिशा बदलते हुए महत्वपूर्ण टोलोलिंग चोटी पर भी कब्जा कर लिया और प्रधानमंत्री वाजपेयी ने कारगिल का दौरा किया। अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने 15 जून 1999 को पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से पाकिस्तानी सैनिकों को पीछे हटाने का आग्रह किया लेकिन पाकिस्तान ने उस अपील को अनसुना कर दिया। 11 घंटे के भीषण संघर्ष के बाद भारतीय सेना ने 20 जून 1999 को टाइगर हिल के पास प्वाइंट 5060 और प्वाइंट 5100 पर भी पुनः कब्जा कर लिया। अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने 5 जुलाई 1999 को नवाज शरीफ से मुलाकात की, जिसके बाद पाकिस्तान ने कारगिल से पाकिस्तानी सैनिकों को हटाने की घोषणा की। 11 जुलाई 1999 को पाकिस्तानी सैनिकों ने पीछे हटना शुरू किया और भारतीय सेना ने बटालिक की प्रमुख चोटियों पर कब्जा कर लिया। भारतीय सेना ने 14 जुलाई 1999 को ह्यऑपरेशन विजयह्व की सफलता की घोषणा की और 26 जुलाई 1999 को वीर 527 सैनिकों की शहादत के बाद कारगिल युद्ध समाप्त हुआ।

बहुत ऊंचाई पर लड़े गए उस भीषण युद्ध के दौरान अपनी बहादुरी और साहसिक कार्यों के लिए कई सैन्य अधिकारी राष्ट्रीय नायक बन गए, जिनमें 13 जेएके राइफल्स के कैप्टन विक्रम बत्रा, 18 ग्रेनेडियर्स के ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव, 1/11 गोरखा राइफल्स के लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे, 18 ग्रेनेडियर्स के लेफ्टिनेंट बलवान सिंह, एएससी, 2 राज आरआईएफ के कैप्टन एन केंगुरुसे प्रमुख रूप से शामिल हैं। युद्ध के दौरान भारत सेना के अनेक नायकों ने अपने प्राणों की आहुति इसीलिए दी ताकि पूरा देश चैन की नींद सो सके। कारगिल युद्ध में शौर्य और पराक्रम के लिए ग्रेनेडियर योगेन्द्र सिंह यादव तथा लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे को परमवीर चक्र और लेफ्टिनेंट बलवान सिंह को महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। कैप्टन एन केंगुरुसे को मरणोपरांत महावीर चक्र और कैप्टन विक्रम बत्रा को मरणोपरांत परमवीर चक्र प्रदान कर उनकी शहादत का सम्मान किया। कारगिल युद्ध के दौरान कैप्टन विक्रम बत्रा के शब्द, ह्यये दिल मांगे मोरह्व तो अब भी लोगों के कानों में गूंजते हैं। कारगिल युद्ध के ऐसे ही वीर नायकों की बहादुरी, साहस और जुनून की कहानियां आज भी देश के प्रत्येक नागरिक के दिलोदिमाग में जोश भर देती हैं।

(लेखक साढ़े तीन दशक से पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

कोटा में युवक पर ताबड़तोड़ फायरिंग, सीसीटीवी फुटेज आया सामने

कोटा (एजेंसी)। राजस्थान के कोटा जिले में देर रात दादाबाड़ी थाना क्षेत्र के वक्फ नगर में 5 बदमाशों ने एक युवक इरशाद (28) पर उसके घर के बाहर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। हमले में इरशाद को दो गोलियां लगी हैं, और घायल इरशाद को निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना का सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है, जिसमें बदमाश फायरिंग करते साफ दिख रहे हैं। इरशाद ने बताया कि अल्फेज, शाहरुख, सलमान और भाया नाम के बदमाश दो बाइकों पर आए और उन पर 7 राउंड फायर किए। इरशाद का कहना है कि इन लोगों से उनकी पुरानी दुश्मनी है और पहले भी उस पर चाकू से हमला कर चुके हैं। कोटा पुलिस ने बदमाशों की धरपकड़ के लिए टीम गठित कर दी है। डीएसपी योगेश शर्मा ने बताया कि देर रात फायरिंग की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुरानी रंजिश के चलते हुई इस वारदात में घायल इरशाद को हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया है। बदमाशों की धरपकड़ के लिए टीम गठित कर दी गई है। पुलिस टीम अलग-अलग इलाकों में दबिश दे रही है और जल्द ही सभी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

मनसे कार्यकर्ताओं ने होटलों के बाहर गुजराती में लिखे साइनबोर्ड हटाए

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के कार्यकर्ताओं ने मराठी साइनबोर्ड के इस्तेमाल की मांग को लेकर मुंबई-अहमदाबाद राजमार्ग पर स्थित कई होटलों के बाहर गुजराती में लिखे साइनबोर्ड को हटा दिया। महाराष्ट्र का पालघर जिला गुजरात की सीमा से लगा हुआ है। यह प्रदर्शन राज्य के प्राथमिक विद्यालयों में हिंदी को अनिवार्य करने को लेकर उठे विवाद के तुरंत बाद शुरू हुआ। सूत्रों ने बताया कि मनसे समर्थकों ने हलोली गांव के पास होटल के बाहर गुजराती में लिखा साइनबोर्ड तोड़ दिया। उन्होंने बताया कि कई होटलों ने गुजराती में लिखे अपने बोर्ड काले कपड़े से ढक दिए हैं।

मायानगरी मुंबई में सुबह से हो रही मूसलाधार बारिश... कई इलाकों में जलभराव

मुंबई (एजेंसी)। मायानगरी मुंबई में शुक्रवार सुबह से ही लगातार बारिश हो रही है। भारी बारिश होने से कई इलाकों में जलभराव हो गया है। सुबह-सुबह दफ्तर जाते वक्त तेज बारिश से ट्रैफिक और लोकल ट्रेनों की रफ्तार भी थोड़ी सुस्त है। अंधेरी ईस्ट में भारी बारिश के कारण जलभराव हुआ है। इसकारण अंडरपास बंद किया गया है। बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स इलाके में भी मूसलाधार बारिश हो रही है। मुंबई में अगले कुछ दिनों तक मध्यम से भारी बारिश जारी रहने की संभावना है। बता दें कि आईएमडी ने शुक्रवार सुबह के वक्त मुंबई, ठाणे और पालघर जिलों में कुछ स्थानों पर तेज बारिश होने की संभावना जाहिर की थी। वहीं, 27 जुलाई तक हाई टाइड (ऊँची समुद्री लहरें) की चेतावनी दी है। जुहू बीच, मरीन ड्राइव और अन्य समुद्री तटीय क्षेत्रों में जाने से मना किया गया है। हाई टाइड के समय समुद्र की लहरें 4.5 मीटर (लगभग 15 फीट) तक ऊंची हो सकती हैं। इससे निचले इलाकों में पानी भरने का खतरा बना हुआ है। लगातार बारिश को देखकर मुंबई पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है। मुंबई और आसपास के जिलों में भारी बारिश के कारण नागरिकों को सलाह दी गई है कि जब तक बहुत ज़रूरी न हो, घर के अंदर ही रहें, तटीय इलाकों से बचें और सावधानी से गाड़ी चलाएं।

सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी को समन पर रोक का अंतरिम आदेश बरकरार रखा

-सावरकर पर टिप्पणी से जुड़ा हुआ है मामला

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के खिलाफ उत्तर प्रदेश में दर्ज एक आपराधिक मामले में समन पर लगी रोक को फिलहाल जारी रखा है। यह मामला 2022 में विनायक दामोदर सावरकर पर राहुल गांधी की कथित विवादास्पद टिप्पणी से जुड़ा हुआ है। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस ऑगस्टिन जॉर्ज मसीह की पीठ ने शुक्रवार को इस मामले में सुनवाई करते हुए समन पर रोक को आगे भी बरकरार रखने का निर्देश दिया और अगली सुनवाई चार सप्ताह बाद निर्धारित की है। गौरतलब है कि राहुल गांधी ने निचली अदालत द्वारा जारी समन के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर न्यायिक राहत की मांग की थी। अदालत ने पहले ही मामले की सुनवाई पर अंतरिम रोक लगाई हुई थी, जिसे अब आगे भी जारी रखा गया है।

राज्य सरकार ने दाखिल किया जवाब- उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता गरिमा प्रसाद ने अदालत को सूचित किया कि राज्य सरकार ने राहुल गांधी द्वारा दाखिल याचिका के जवाब में अपना पक्ष कोर्ट में प्रस्तुत कर दिया है।

66 नक्सलियों ने किया आत्मसमर्पण, लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति निष्ठा की शपथ ली

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में 66 कट्टर नक्सलियों ने आत्मसमर्पण कर दिया, जो राज्य में वामपंथी उग्रवाद के लिए एक बड़ा झटका है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इसे सुरक्षा दृष्टि से महत्वपूर्ण कदम बताया। मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि यह सामूहिक आत्मसमर्पण पांच जिलों में हुआ, जिसमें बीजापुर से 25, दंतेवाड़ा से 15, कांकेर से 13, नारायणपुर से 8 और सुकमा से 5 उग्रवादियों ने औपचारिक रूप से हिंसा का त्याग किया और लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति निष्ठा की शपथ ली। समूह में महिला उग्रवादियों का एक बड़ा हिस्सा शामिल था, जिनमें से कुछ दो दशकों से भी अधिक समय से नक्सली गतिविधियों में सक्रिय थीं। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बताया कि हथियार डालने वालों में 49 उग्रवादी शामिल थे, जिन पर कुल 2.27 करोड़ रुपए का इनाम घोषित था। इनमें उच्च पदस्थ नेता और लंबे समय से उग्रवादी शामिल थे। इनमें सबसे प्रमुख रमन्ना इरपा उर्फ जगदीश था, जो विशेष क्षेत्रीय समिति का सदस्य था और जिस पर 25 लाख रुपए का इनाम था।

चुनाव आयोग पर कांग्रेस के आरोपों पर भड़के सुधांशु त्रिवेदी, बोले- आपातकाल के 50 साल बाद भी नहीं बदली मानसिकता

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी ने बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के लिए चुनाव आयोग पर बेतुके आरोप लगाने के लिए कांग्रेस और राहुल गांधी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि यह संवैधानिक संस्थाओं को चुनाव जीते या नहीं के आधार पर मान्यता देने की उनकी 'मानसिकता' को दर्शाता है। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल लगाने के फैसले का जिक्र करते हुए, जिसने संवैधानिक संस्थाओं की स्वतंत्रता को काफी सीमित कर दिया था, सुधांशु त्रिवेदी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस की मानसिकता नहीं बदली है।

सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि चुनावों के मामले में, कांग्रेस, इंडिया गठबंधन और खासकर राहुल गांधी बेतुके आरोप लगा रहे हैं। यह उस मानसिकता को दर्शाता है कि आपातकाल के 50 साल बाद भी मानसिकता नहीं बदली है। अगर इंदिरा जी कहती थीं कि संवैधानिक संस्थाओं की मान्यता इस आधार पर तय होगी कि वे चुनाव जीती हैं या नहीं, तो आज राहुल गांधी कहते हैं कि चुनाव आयोग की विश्वसनीयता इस आधार पर तय होगी कि वे चुनाव जीते हैं या नहीं।

त्रिवेदी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के दौरान चुनाव आयोग पर कांग्रेस के आरोपों की कड़ी आलोचना की और कहा कि उनके अपने पूर्व अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव और महाराष्ट्र के प्रभारी (2018-2024), आशीष दुआ, कुछ और ही लिखते हैं। भाजपा नेता ने वार करते हुए कहा कि उन्होंने महाराष्ट्र चुनावों पर क्या-क्या कहा था। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के एक पूर्व सचिव, जो 2018 से 2024 तक महाराष्ट्र के प्रभारी रहे, ने महाराष्ट्र में हार का विश्लेषण करते हुए एक लेख में लिखा था कि वे किसी और को दोष नहीं दे सकते, वे कांग्रेस पार्टी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) गठबंधन की कमियों के कारण महाराष्ट्र हार गए।

त्रिवेदी की यह टिप्पणी राहुल गांधी द्वारा गुरुवार को चुनाव आयोग को दी गई चेतावनी के बाद आई है कि विपक्ष उन्हें बिहार में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान से नहीं बचने देगा। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने गुरुवार को लोकसभा स्थगित होने के तुरंत बाद संसद के बाहर संवाददाताओं से कहा, 'मैं चुनाव आयोग को संदेश देना चाहता हूं: यदि आपको लगता है कि आप इससे बच निकलेंगे, यदि आपके अधिकारी सोचते हैं कि वे इससे बच निकलेंगे, तो आप गलत हैं। आप इससे बच नहीं पाएंगे, क्योंकि हम आपके पीछे पड़ जाएंगे।'

सांसद कंगना सहित पूरे कुल्लूवासी पीएम मोदी के इस ड्रीम प्रोजेक्ट के विरोध में उतरे

कुल्लू (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ड्रीम प्रोजेक्ट बिजली महादेव रोप-वे का हिमाचल में विरोध हो रहा है। कुल्लू के ढालपुर में शुक्रवार सैकड़ों लोग प्रोजेक्ट के खिलाफ सड़कों पर उतर आए हैं। प्रदर्शनकारी इस प्रोजेक्ट को नहीं लगाने की मांग कर रहे हैं। इसके पहले कुल्लू के रामशीला में एकत्र हुए लोगों ने आक्रोश रैली निकाली। इतना ही नहीं बीजेपी सांसद कंगना रनोट भी कुछ समय पहले कार्यक्रम में इस प्रोजेक्ट का विरोध कर चुकी हैं। तब कंगना ने कहा था कि कि यदि देव समाज के लोग नहीं चाहते, तब यह प्रोजेक्ट बंद होना चाहिए, क्योंकि उनके लिए देवता का आदेश आधुनिकीकरण से ज्यादा जरूरी है। पीएम मोदी के करीबी राम सिंह समेत कई भाजपा नेता भी इस प्रोजेक्ट का विरोध कर रहे हैं। कुल्लू के लोगों के आराध्य बिजली महादेव मंदिर को रोप-वे प्रोजेक्ट के कारण इतिहास में पहली बार आम श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए बंद किया गया है। देव आदेशों से अगले 6 महीने तक देशभर से यहां पहुंचने वाले लोग बिजली महादेव के दर्शन नहीं कर पाएंगे। इससे कुल्लू में रोपवे प्रोजेक्ट को लेकर सियासी पारा गरमा गया है। बिजली महादेव संघर्ष समिति के अध्यक्ष सुरेश नेगी ने बताया कि घाटी की जनता नहीं चाहती कि यहां रोप-वे बनाया जाए। यह देव आस्था के साथ खिलवाड़ है। इस रोप-वे प्रोजेक्ट से पर्यावरण को भी नुकसान होगा। वहीं खराहल घाटी के ग्रामीणों का कहना है कि बिजली महादेव ने देव वाणी में कहा कि उन्हें रोपवे स्वीकार नहीं है। देव आस्था वाले लोग इसलिए इस प्रोजेक्ट का विरोध कर रहे हैं। इस रोप-वे के लिए खराहल घाटी में बड़ी संख्या में देवदार के पेड़ काटे जा रहे हैं। ग्रामीणों को डर है कि इससे भविष्य में लैंडस्लाइड जैसी घटनाएं बढ़ेगी। बुजुर्ग शिवनाथ ने इस प्रोजेक्ट के लगने पर आत्मदाह तक की चेतावनी दी है।

विधानसभा चुनाव से पहले बांग्ला कार्ड खेलने लगी ममता, भाजपा को कर रही सीधे टारगेट

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनावों से करीब 10 महीने पहले, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बांग्ला भाषा का मुद्दा उठाना शुरू कर दिया है। उन्होंने गुरुवार को कोलकाता में एक कार्यक्रम में एक नए भाषा आंदोलन का आह्वान किया। सीएम ममता ने आरोप लगाया कि भाजपा शासित राज्यों में बांग्ला भाषी लोगों को बांग्लादेशी कहकर हिरासत में लिया जा रहा है और उन्हें काम नहीं करने दिया जा रहा है, इस घटनाक्रम को उन्होंने भाषाई आतंकवाद करार दिया। उन्होंने कहा कि यह स्थिति अस्वीकार्य है और यह बांग्ला भाषी लोगों के उत्पीड़न के समान है। ममता ने जोर दिया कि बांग्ला दुनिया की पांचवीं सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और भारत में करीब 30 करोड़ लोग बांग्ला भाषी हैं। उन्होंने हिरासत में लिए गए बांग्ला भाषी लोगों के हालिया मामलों का भी हवाला दिया, विशेष रूप से एनसीआर के गुरुग्राम में हुई घटना का।

ममता के इन बयानों से संकेत मिलता है कि वह विधानसभा चुनावों तक इस भाषा के मुद्दे को आगे बढ़ाना चाहती हैं, क्योंकि उन्होंने पहले भी चुनावों में बांग्ला कार्ड खेला है। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि बांग्ला भाषी लोगों पर इस तरह का हमला बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और बंगालियों के लिए उनकी भूमि सर्वोपरि है, जिसके लिए वे कुछ भी करेगा। यह मुद्दा पश्चिम बंगाल के अलावा असम और त्रिपुरा जैसे राज्यों में भी बड़ी संख्या में बांग्ला भाषी आबादी के कारण महत्वपूर्ण है।

राबड़ी देवी का आरोप, बीजेपी-जेडीयू से तेजस्वी की जान को खतरा, अब तक 4 बार हमले हो चुके

डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी को राबड़ी देवी ने कहा, बचपन से गुंडई करते

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानमंडल के मानसून सत्र के 5वें और आखिरी दिन लंच के बाद भी सदन में विपक्ष का हंगामा देखने को मिला। सदन की कार्यवाही 7 मिनट के बाद स्थगित की गई। ढाई बजे कार्यवाही फिर शुरू हुई। विधानसभा स्पीकर ने विदाई भाषण में कुछ शायरियां पढ़ीं उन्होंने कहा कि नाराजगी कभी भी इतनी लंबी नहीं होनी चाहिए कि नाराजगी रह जाए और इंसान गुजर जाए। खूबियां इतनी नहीं हममें कि तुम्हें कभी याद आएंगे पर इतना इतबार हमें खुद पर है आप हमें कभी भूल नहीं पाएंगे।

इसके पहले सत्र में पूर्व सीएम राबड़ी देवी ने सम्राट चौधरी पर कहा कि वे बचपन से बोरिंग रोड इलाके में गुंडई करता है। बोरिंग रोड चौराहे पर लड़कियों को छेड़ते रहे। वे कैसे दूसरे को गुंडा बोल सकते हैं।

दरअसल डिप्टी सीएम चौधरी ने सदन में तेजस्वी से कहा था कि जिसका बाप अपराधी वहां क्या बोलेगा। विधान परिषद में राबड़ी देवी ने तेजस्वी की जान को खतरा बताया और बीजेपी-जेडीयू पर इसके लिए साजिश करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि तेजस्वी की जान को खतरा है। बीजेपी और जेडीयू वाले हमला करवा रहे हैं। अब तक 4 बार तेजस्वी पर हमले हो चुके हैं। ये लोग संस्कारहीन हैं। वहीं मुख्यमंत्री ने विपक्ष की तरफ इशारा करके कहा कि पहले यह लोग इस तरह का कपड़ा पहनते थे। राबड़ी देवी की तरफ इशारा करके कहा कि इन्हीं के कहने पर यह लोग सब इस तरह का कपड़ा पहन कर आ रहे हैं।

इसके बाद विधानसभा की कार्यवाही महज 5 मिनट में स्थगित कर दी गई। सदन शुरू करने से पहले स्पीकर ने मजाकिया लहजे में पूछा कि आज मौसम भी ठंडा है और माहौल भी ठंडा हैं। प्रश्नकाल से कार्यवाही शुरू हुई, विपक्ष के विधायक नारेबाजी करने लगे। राजद-कांग्रेस और माले के विधायक नारेबाजी करते हुए वेल में पहुंच गए। विपक्षी सदस्य टेबल पलटने लगे, इस पर विस अध्यक्ष ने कहा कि टेबल मत पलटिए, इसके बाद भी विपक्षी विधायक नहीं माने और हंगामा जारी रहा।

मणिपुर में छह महीने और बढ़ा राष्ट्रपति शासन, संसद में प्रस्ताव को मिली मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा लोकसभा में पेश किए गए एक प्रस्ताव के बाद मणिपुर में राष्ट्रपति शासन छह महीने के लिए बढ़ा दिया गया है। यह विस्तार 13 अगस्त, 2025 से प्रभावी होगा। मीडिया रिपोर्ट में आधिकारिक सूचना के मुताबिक यह सदन राष्ट्रपति द्वारा मणिपुर के संबंध में 13 फरवरी, 2025 को जारी की गई उद्घोषणा को 13 अगस्त, 2025 से छह महीने तक बढ़ा दिया है।

कर्नाटक में फिर घमासान: डीके शिवकुमार के साथ कर्नाटक सीएम सिद्धरमैया दिल्ली रवाना

बेंगलुरु (एजेंसी)। धुआं तभी उठता है जब आग होती है। कर्नाटक कांग्रेस में सियासी आग को ढंकने की कोशिशों के बीच धुआं उठता लोगों को दिखने लगा है। जहां एक तरफ कांग्रेस की सरकार में सब कुछ ठीक होने का दावा किया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ अफरातफरी का महौल बना हुआ है। खबरें है कि कर्नाटक के राजनीतिक हलको में मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के कार्यकाल पूरा करने को लेकर केवल इसी बात की चर्चा हो रही है कि वह मुख्यमंत्री बने रहेंगे या नहीं जबकि वह एक अनोखा रिकॉर्ड बनाने की ओर अग्रसर हैं। इस बीच, सिद्धरमैया और उपमुख्यमंत्री व मुख्यमंत्री पद के एक और दावेदार डीके शिवकुमार एक बार फिर दिल्ली रवाना हो गए हैं। मुख्यमंत्री के रूप में अपने दूसरे कार्यकाल में सिद्धरमैया अब कर्नाटक के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले निर्वाचित मुख्यमंत्री बनने के करीब हैं। वह वरिष्ठ नेता देवराज उर्स के रिकॉर्ड की बराबरी करने के करीब हैं।देवराज उर्स 2700 से अधिक दिनों तक मुख्यमंत्री बने रहे थे।

वैसे तो सिद्धरमैया बार-बार यह दावा करते रहे हैं कि वह अपना पांच साल का कार्यकाल पूरा करेंगे, लेकिन इसके बावजूद यह सवाल बना हुआ है कि क्या वह तथाकथित 'रोटेशनल फॉर्मूले' के तहत डीके शिवकुमार के लिए पद छोड़ देंगे। शिवकुमार को डीकेएस कहा जाता है। जून माह के बाद से दोनों नेता तीसरी बार दिल्ली गए हैं, जबकि कांग्रेस की राज्य इकाई में मुख्यमंत्री पद को लेकर असहज शांति व्याप्त है। राष्ट्रीय राजधानी की अपनी यात्रा के दौरान दोनों नेता (सिद्धरमैया व शिवकुमार) कांग्रेस के शीर्ष नेताओं से मिल सकते हैं। कांग्रेस नेतृत्व के आदेश के बाद इस बार विधायकों ने मुख्यमंत्री के बदलने के संबंध में खुलकर कोई टिप्पणी नहीं की है।

हालांकि, अब तक इस संबंध में कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। राज्य के राजनीतिक हलकों में, खासकर सत्तारूढ़ कांग्रेस के भीतर इस बात की अटकलें काफी समय से लगाई जा रही हैं कि इस साल के अंत में मुख्यमंत्री बदले जा सकते हैं। यह चर्चा सिद्धरमैया और शिवकुमार के बीच सत्ता साझा करने के समझौते को लेकर है। ऐसा लगता है कि कांग्रेस नेतृत्व ने बिहार चुनाव समाप्त होने तक दोनों पक्षों को इंतजार कराने की रणनीति अपनाई है। इस समय सिद्धरमैया देश में कांग्रेस के इकलौते ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) मुख्यमंत्री हैं और पार्टी के कई नेताओं का मानना है कि अगर पार्टी उन्हें हटाती है तो इसका असर बिहार चुनाव पर पड़ सकता है क्योंकि यहां ओबीसी मतदाता की चुनाव परिणामों में निर्णायक भूमिका होती है।

सिद्धरमैया के खिलाफकोई कदम उठाया तो इसके क्या परिणाम हो सकते हैं? एक कांग्रेस नेता ने कहा कि यह कदम ओबीसी हितों के भी खिलाफमाना जाएग क्योंकि राहुल गांधी लगातार इसका (ओबीसी) समर्थन करते हुए नजर आ रहे हैं। जैसे कि वह जातीय जनगणना कराने और आरक्षण बढ़ाने का मुद्दा उठा रहे हैं। पार्टी पूरी तरह से इस बात को लेकर सतर्क है कि अगर उसने सिद्धरमैया के खिलाफ कोई कदम उठाया तो इसके क्या परिणाम हो सकते हैं। सिद्धरमैया को कर्नाटक में अल्पसंख्यक, पिछड़ा वर्ग और दलित समुदायों का जबरदस्त समर्थन प्राप्त है और उन्हें अधिकतर विधायकों का भी विश्वास हासिल है। कांग्रेस ने जब 2023 में राज्य का चुनाव जीता था तो सिद्धरमैया और शिवकुमार के बीच मुख्यमंत्री पद के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा रही थी। पार्टी ने डीकेएस को मना लिया और उन्हें उपमुख्यमंत्री बना दिया।

संघ द्वारा मुस्लिम समुदाय के साथ तालमेल बनाने की कवायद मानी जा रही मुलाकात

नई दिल्ली (एजेंसी)। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने बृहस्पतिवार को नई दिल्ली में मुस्लिम मौलवियों, विद्वानों और समुदाय की प्रमुख हस्तियों से मुलाकात की और कई अहम मुद्दों पर विचार विमर्श किया। आरएसएस के संगठन मुस्लिम राष्ट्रीय मंच (एमआरएम) के माध्यम से यह दिल्ली के हरियाणा भवन में यह बैठक आयोजित की गई। इस मुलाकात को संघ द्वारा मुस्लिम समुदाय के साथ तालमेल बनाने की कड़ी के तौर पर देखा जा रहा है। दरअसल, पिछले तीन साल से संघ प्रमुख मोहन भागवत की तरफ से प्रमुखता से मुस्लिमों और हिंदुओं के बीच की दूरी को पाटने की शुरुआत हुई है।

इस बैठक में भागवत के अलावा आरएसएस के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले, सह सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल, राम लाल, इंद्रेश कुमार सहित आरएसएस के अन्य पदाधिकारी शामिल हुए हैं।भागवत ने 50 से अधिक मुस्लिम मौलवियों, विद्वानों से मुलाकात की, उनमें अखिल भारतीय इमाम संगठन के मुख्य इमाम उमर अहमद इलियासी, मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय के पूर्व चांसलर और मौलाना अबुल कलाम आजाद के पोते फिरोज बख्त अहमद, मौलाना महमूद हसन, मौलाना नजीमुद्दीन, जुबैर गोपलानी के अलावा कई अन्य मौलवियों एवं विद्वान शामिल थे।

गौरतलब है कि सितंबर 2022 में, भागवत ने भारत में धार्मिक समावेशिता को बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए कई प्रमुख मुस्लिम बुद्धिजीवियों से मुलाकात की थी। इस बैठक का उद्देश्य आरएसएस के विचारों का प्रचार-प्रसार करना और समुदायों के बीच आपसी समझ को बढ़ावा देना था। उस दौरान ज्ञानवापी मस्जिद विवाद, हिजाब विवाद और जनसंख्या नियंत्रण जैसे प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की गई।

हरियाणा भवन में बृहस्पतिवार को हुई बैठक को लेकर संघ की तरफ से कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया। फिरोज बख्त ने कहा, भाईचारा सबसे जरूरी मुद्दा रहा। एक खाई बनाने की कोशिश हो रही है, उसे पाटने पर बात हुई। हम अलग-अलग धर्मों को मानते होंगे, लेकिन हम सभी भारतीय हैं। इमाम इलियासी ने कहा कि यह पहली बार है जब इतनी बड़ी संख?या में मुस्लिम धर्मगुरुओं ने आरएसएस के साथ मीटिंग की है। आरएसएस नेता इंद्रेश कुमार वर्षों से मुस्लिमि समाज के साथ संवाद कर रहे हैं।

हरिद्वार पहुंचे 5 करोड़ कांवडिए, अपने-अपने घर लौटे पर 10 हजार मीट्रिक टन कचरा बना चुनौती

हरिद्वार (एजेंसी)। 23 जुलाई को कांवड़ मेला संपन्न हो गया है। इसमें में लगभग 5 करोड़ कांवडिया पहुंचे थे। इतनी बड़ी संख्या में उमड़ी भीड़ के कारण 10 हजार मीट्रिक टन कचरा बिखरा पड़ा है। जिसे समेटने और एकत्रित करने में एक हजार से ज्यादा सफाई मित्र पूरी ताकत से जुटे हुए हैं। गंगा सभा के सदस्य मनीष बताते हैं कि इस कचरे को स्थानीय स्वयंसेवक और नगम निगम के कर्मचारी मिलजुल कर हर की पौड़ी और दूसरे घाटों से हटा रहे हैं। जेसीबी लगी ट्रैक्टर-ट्रॉली को कूड़ा ढ़ोते देखा जा सकता हैं। जहां ट्रैक्टर नहीं जा पा रहे हैं वहां लोग हाथों से ही इसे उठा रहे हैं।

इस कचरे में अधिकांश सिंगल-यूज प्लास्टिक, मल्टीलेयर प्लास्टिक शामिल हैं। हरिद्वार की दैनिक कचरा निस्तारण क्षमता 30-50 मीट्रिक टन होने के बावजूद, मेले के बाद यह मात्रा कई गुना बढ़ गई है। हरिद्वार के जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने बताया कि मेले के दौरान रोजाना लाखों कांवड़िए पैदल और वाहनों से हरिद्वार पहुंचे, जिसके कारण सफाई वाहनों का आवागमन मुश्किल हो गया था। उन्होंने कहा, जिन क्षेत्रों में सफाईकर्मी पहुंच पाए, वहां नियमित सफाई होती रही, लेकिन मेले के समापन के बाद अब गंदगी का निस्तारण बड़ी चुनौती है।

मेले के समापन के बाद हरिद्वार नगर निगम ने स्वच्छता को लेकर कमर कस ली है। नगर निगम ने 23 जुलाई की शाम से 24 जुलाई की सुबह तक 10 घंटे का विशेष सफाई अभियान चलाया, जिसमें 1,000 से अधिक कर्मचारियों को लगाया गया। इसके अलावा, तीन दिवसीय विशेष सफाई अभियान शुरू किया गया है, जिसमें हर की पौड़ी, मालवीय घाट, कनखल घाट, सुभाष घाट, नाई घाट, अलकनंदा घाट, शिव घाट, बिरला घाट, अपर रोड, कांवड़ पटरी मार्ग और अन्य प्रमुख क्षेत्रों को शामिल किया गया है। मेयर किरण जैसल ने मंगलवार को मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया और सफाईकर्मियों को कड़े निर्देश दिए कि कहीं भी कूड़े के ढेर नजर नहीं आने चाहिए। इस अभियान में ठोस कचरे का वैज्ञानिक निस्तारण किया जा रहा है। नगर निगम ने दुकानदारों को कंपोस्टेबल बैग वितरित किए थे, जो पर्यावरण के अनुकूल हैं और कचरे के निस्तारण में मदद कर रहे हैं। इस बार नगर निगम ने सफाई व्यवस्था को मजबूत करने के लिए लाइनर बैग प्लस ड्रोन निगरानी मॉडल लागू किया, जो देशभर में चर्चा का विषय बना है। हर 6 घंटे में हर की पौड़ी और आसपास के क्षेत्रों में कूड़ा निस्तारण किया गया था। ड्रोन और सीसीटीवी के माध्यम से मेला क्षेत्र की निगरानी की जा रही थी ताकि सफाई कार्य सुचारु रूप से चल सके। इस पहल की स्थानीय व्यापारियों और श्रद्धालुओं ने सराहना की है।

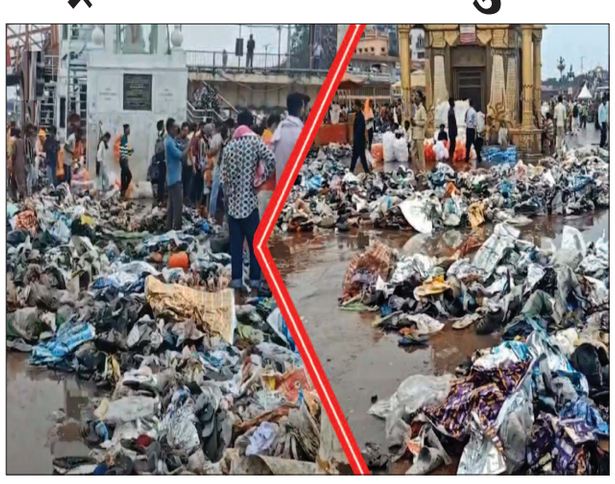

हमारी पार्टी सत्ता की नहीं, सामाजिक क्रांति की लड़ाई लड़ रही है – जीतन राम मांझी

दिल्ली में 'हम' पार्टी के स्थापना दिवस पर हाजी शकील सैफी ने नोटों की माला पहनाकर किया भव्य स्वागत, दिया खुला समर्थन

वर्ल्ड पीस हार्मनी के चेयरमैन हाजी डॉ. शकील सैफी का दमदार ऐलान – हम पार्टी के हर उम्मीदवार के लिए चुनावी मैदान में उतरूंगा, मांझी जी की सोच ही असली बदलाव की राह

नई दिल्ली। राजधानी में गुरुवार को आयोजित हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर) के 10वें स्थापना दिवस समारोह ने बिहार की राजनीति को झकझोर देने वाला नया मोड़ ले लिया।

केंद्रीय मंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के दिल्ली स्थित आवास पर हुए इस आयोजन में राजनीतिक, सामाजिक और रणनीतिक गठजोड़ का नजारा साफ तौर पर दिखा।

इस खास मौके पर मंच पर पहुंचे वर्ल्ड पीस हार्मनी के चेयरमैन और सैफी हॉस्पिटल्स के सीईओ हाजी डॉ. शकील सैफी, जिन्होंने मांझी जी को नोटों की माला पहनाकर, पुष्पगुच्छ अर्पित करते हुए उनका सार्वजनिक समर्थन किया।

मांझी का ऐलान - "हमारी लड़ाई हाशिये पर खड़े इंसान के लिए है"

अपने संबोधन में जीतन राम मांझी ने कहा:

> मारी पार्टी किसी सत्ता की भूखी ताकत नहीं, बल्कि समाज के सबसे पिछड़े, दलित, शोषित और वंचित लोगों के लिए संघर्ष का नाम है। हम बाबा साहब डॉ. अंबेडकर की विचारधारा के उत्तराधिकारी हैं।

सैफी का समर्थन बना गेमचेंजर – मैदान में उतरने का ऐलान

हाजी शकील सैफी ने अपने जोशीले संबोधन में कहा:

> अब मैं सिर्फ मंच पर खड़ा नहीं रहूंगा, बिहार विधानसभा चुनाव में ह्यहमह्ण पार्टी के प्रत्याशियों के लिए प्रचार करूंगा। यह समर्थन औपचारिक नहीं है – यह दिल से है, जमीन से है।

उन्होंने मांझी जी की जीवनी को आदर्श बताते हुए कहा कि उनका जीवन संघर्ष, सेवा और सिद्धांत की मिसाल है, जिसे नई

पीढ़ी को अपनाना चाहिए।

सैफी परिवार की पूरी टीम मैदान में उतरी

सैफी साहब के साथ मौजूद रहे:

हाजी फैज सैफी (यूथ विंग चेयरमैन, वर्ल्ड पीस हार्मनी)
हाजी वसीम सैफी
हाजी इमरान सैफी
हाजी महबूब
तहसीन सैफी
रिजवान खान

इन सभी ने 'हम' पार्टी को सामाजिक न्याय की आखिरी उम्मीद बताते हुए, सक्रिय भूमिका निभाने की घोषणा की।

मजबूत गठजोड़

हाजी शकील सैफी और जीतन राम मांझी की पहले हुई मुंबई मीटिंग में ही यह समीकरण बन चुका था, जिसे अब दिल्ली में सार्वजनिक मंच से औपचारिक रूप दे दिया गया। यह गठजोड़ अब एनडीए के भीतर एक नई मजबूत लहर के रूप में देखा जा रहा है।

अन्य विशिष्ट उपस्थिति:

डॉ. दानिश रिजवान (मुख्य सलाहकार),पुष्पा मांझी (समाजसेविका, मांझी जी की सुपुत्री),अदिति शर्मा (दिल्ली महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष),अविनाश श्रीवास्तव (युवा अध्यक्ष)

"हम" पार्टी का यह स्थापना दिवस केवल एक जश्न नहीं, बल्कि अगली राजनीतिक लड़ाई की जमीन तैयार करने का बिगुल था।

हाजी डॉ. शकील सैफी जैसे प्रभावशाली सामाजिक नेतृत्व के शामिल होने से पार्टी को एक मजबूत प्रचारक चेहरा, रणनीतिक समर्थन और जमीनी कैडर की शक्ति मिल गई है।

अब ये साफ है –

जीतन राम मांझी की "हम" पार्टी 2025 की सियासत में हाशिये पर नहीं, केंद्र में होगी।

"अररिया पुलिस लाइन में दीदी की रसोई का शुभारंभ, पुलिस बल को मिलेगा स्वच्छ और पौष्टिक भोजन"

नारी सशक्तिकरण की दिशा में जीविका की बड़ी पहल, जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने किया उद्घाटन

अररिया । नारी स्वावलंबन और पोषणयुक्त खानपान की दिशा में एक अभिनव कदम उठाते हुए अररिया पुलिस लाइन परिसर में "दीदी की रसोई" का भव्य उद्घाटन किया गया। इस पहल की शुरूआत जिलाधिकारी अनिल कुमार, पुलिस अधीक्षक अंजनी कुमार एवं जीविका के जिला परियोजना प्रबंधक नवीन कुमार ने संयुक्त रूप से की। कार्यक्रम में पुलिस बल के साथ-साथ जीविका से जुड़ी बड़ी संख्या में दीदियों की उपस्थिति रही। इस रसोई के माध्यम से पुलिसकर्मियों को अब घर जैसा पौष्टिक, स्वच्छ और गुणवत्तापूर्ण भोजन मिलेगा। साथ ही, यह पहल स्थानीय महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाएगी। दीदियों द्वारा संचालित यह रसोई न केवल स्वावलंबन की मिसाल बनेगी, बल्कि पुलिस बल के लिए एक महत्वपूर्ण सहयोगी व्यवस्था भी सिद्ध होगी।

रोजगार, आत्मनिर्भरता और सम्मान झ तीनों की दिशा में एक कदम

जिला प्रशासन की यह पहल महिला सशक्तिकरण को जमीन पर उतारने वाला उदाहरण है। इससे पूर्व, सदर अस्पताल, अनुमंडल अस्पताल फॉरबिसगंज, और एससी-एसटी आवासीय विद्यालय में भी दीदी की रसोई सफलतापूर्वक चलाई जा रही है। पुलिस लाइन में इसकी शुरूआत इस बात का संकेत है कि "दीदी की रसोई" अब एक मॉडल बन चुका है, जिसे दूसरे क्षेत्रों में भी दोहराया जा सकता है।

खुद सक्षम बनें, समाज को मजबूत बनाएं यही है दीदी की सोच

रसोई में काम करने वाली जीविका दीदियों ने कहा कि इस पहल से उन्हें आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक पहचान और आत्मनिर्भरता का अनुभव हो रहा है। वे न सिर्फ अपने परिवार के लिए आय का स्रोत बन रही हैं, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक बदलाव ला रही हैं।

प्रशासन और जीविका की साझेदारी बनी प्रेरणा स्रोत

इस अवसर पर जिलाधिकारी श्री अनिल कुमार ने कहा कि "यह केवल एक रसोई नहीं, बल्कि महिलाओं को अवसर और सम्मान देने का प्रयास है।" एसपी श्री अंजनि कुमार ने भी इस मॉडल की सराहना करते हुए कहा कि "इससे पुलिस बल को अच्छा भोजन मिलेगा और महिलाओं को आय का साधन। यह एक आदर्श उदाहरण है।"

"दीदी की रसोई" केवल एक योजना नहीं, बल्कि एक आंदोलन बनता जा रहा है, जो महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता, पोषण और प्रशासनिक नवाचार की मिशाल पेश कर रहा है। आने वाले समय में यह मॉडल राज्य और देश के अन्य जिलों में भी लागू हो सकता है।

प्रो. (डॉ.) धर्मराज राम होंगे डी.बी. कॉलेज के नव नियुक्त प्राचार्य, डॉ. नंद कुमार को मिला ए.पी.एस.एम. पीजी, कॉलेज बरौनी

अगस्त फर्स्ट वीक में ज्वॉइन करेंगे डी.बी. कॉलेज के नए प्राचार्य

जयनगर । ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा द्वारा जयनगर स्थित डी.बी. कॉलेज के नए प्राचार्य के रूप में टी.पी.एस. कॉलेज, पटना के वरिष्ठ शिक्षाविद् प्रो. (डॉ.) धर्मराज राम को नियुक्त किया गया है। उक्त क्रम में महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. नंद कुमार को ए.पी.एस.एम. पीजी, कॉलेज बरौनी में प्राचार्य के पद पर पदस्थापित किया गया है। जानकारी के अनुसार, नव नियुक्त प्राचार्य प्रो. धर्मराज राम पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय की अंगीभूत इकाई टी.पी.एस. कॉलेज, पटना के मनोविज्ञान

विभाग में सेवारत है, इसी क्रम में उन्होंने अपने सेवाकाल में कर्मठता के साथ विभिन्न प्रशासनिक पदों पर भी योगदान दिया है। साथ ही वह उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रीय / अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों को भी संबोधित किए है। उम्मीद की जा रही है कि नए प्राचार्य अगस्त फर्स्ट वीक में योगदान दे सकते हैं।

प्रभारी प्राचार्य डॉ. नंद कुमार ने कहा कि, 31 जुलाई तक वह डी.बी. कॉलेज में अपनी सेवा देंगे, उसके उपरांत नवीन पदस्थापित कॉलेज में ज्वॉइन करेंगे। 2003 से महाविद्यालय परिवार और जयनगर वासियों से शैक्षणिक - प्रशासनिक कार्यों, कॉन्फ्रेंस, सेमिनार के सफल आयोजन में जो स्नेह, सहयोग और समन्वय मुझे मिला उसे भुला पाना मेरे लिए कठिन है, सभी सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार।

चित्रांश परिवार ने एक नेक दिल इन्सान खो दिया

अंधराठाढ़ी सुनील आनंद की रिपोर्ट

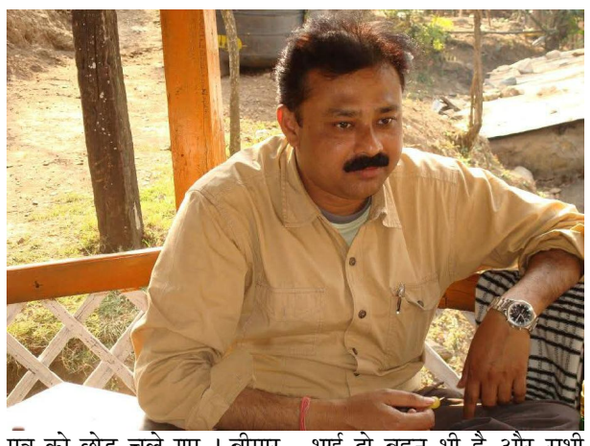

अंधराठाढी । मधुबनी । अंधराठाढी प्रखंड के कायस्थ टोल निवासी स्व. विसेश्वर दत्त धीर के जेष्ठ पुत्र दीपक कुमार दत्त उर्फ. चुन्नु का बीते दिन 24 जुलाई को हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया । उन्होंने दिल्ली स्थित अपने आवास पर अंतिम साँस ली । कई वर्षों से बीमार चल रहे थे और वे रेगुलर चेकअप के लिए गॉव से दिल्ली जाते रहते थे । दो दिन बाद का टिकट था गॉव आने के लिए मगर भगवान अपने शरण में ले लिए । वे सुंदर व्यक्तित्व के धनी थे । नेक दिल इन्सान और सौम्य स्वभाव के थे । वे अपने पीछे भरापुरा परिवार में पत्नी सहित एक पुत्री और दो

पुत्र को छोड़ चले गए । बीमार होने से पहले वे नेपाल में अपना अच्छा खासा व्यापार कर रहे थे और एक सफल बिजनेसमैन थे । बीमारी और शारीरिक अस्वस्थता ने उन्हें गॉव में ला कर बैठा दिया । परिवार में तीन भाई दो बहन भी है और सभी अपने बड़े भैया को पिता के समान अभिभावक मानते हुए उन्हें किसी बात की कमी नहीं रहने दिया । आज दिनांक 25 जुलाई को उनका अंतिम विदाई दिल्ली में ही किया गया । उनका इस तरह का आकस्मिक निधन पर परिजनों सहित टोला और गॉव के सभी लोग दुःखी हैं मर्माहत हैं । आलोक कुमार दत्त, प्रदीप कुमार दत्त उर्फ. रुन्नू , सुधांशु कुमार शेखर, तुलाकांत दास, प्रो. लक्ष्मीकान्त कर्ण, जयकांत कर्ण, राजेंद्र कुमार कर्ण, संजय कुमार दास, अमरेन्द्र कुमार कर्ण, कुमार भाष्कर, प्रशांत कुमार कर्ण, रमेश कुमार कर्ण, महेश कुमार कर्ण, पिताम्बर कर्ण, शिवकुमार दास, फुल कुमार सिंह, प्रकाश कर्ण, अजीत कुमार कर्ण, सुनील आनंद, मुखिया पति अताउर्रहमान, मुखिया रामगुलाम भंडारी, मुखिया राजनारायण राय उर्फ. छोटू राय सहित सैकड़ों लोगों ने गहरी शोक संवेदना व्यक्त किया है ।

मुजफ्फरपुर स्टेशन पर फर्जी टीटीई की गिरफ्तारी!

रेलवे सुरक्षा और सतर्कता की मिसाल!

अमरदीप नारायण प्रसाद

मुजफ्फरपुर :-पूर्व मध्य रेलवे के सोनपुर मंडल में चल रहे मेगा टिकट जांच अभियान के तहत एक बड़ी सफलता हाथ लगी है। मंडल रेल प्रबंधक श्री विवेक भूषण शुद के नेतृत्व में चलाए जा रहे इस अभियान के दौरान वरिष्ठ टिकट परीक्षक श्री संतोष कुमार मीना ने अपनी सतर्कता और त्वरित कार्रवाई से एक फर्जी टीटीई को रंगे हाथों पकड़कर रेलवे की गरिमा की रक्षा की।

गाड़ी संख्या 11123 (ग्वालियरझबरौनी एक्सप्रेस) के कोच र-1 में ड्यूटी पर तैनात श्री मीना को एक संदिग्ध व्यक्ति की गतिविधियाँ असामान्य लगीं। पूछताछ और दस्तावेजों की जांच के बाद यह स्पष्ट हुआ कि आरोपी रविंद्र कुमार, निवासी देवरिया (उत्तर प्रदेश), रेलवे कर्मचारी नहीं था, बल्कि एक फर्जी टीटीई के रूप में यात्रियों से अवैध वसूली कर रहा था।

आरोपी को तुरंत रेलवे सुरक्षा बल (RPF) और राजकीय रेलवे पुलिस (GRP) के हवाले कर दिया गया। उसके खिलाफ विधिसम्मत कार्रवाई प्रारंभ हो चुकी है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री रौशन कुमार ने श्री मीना की कर्तव्यनिष्ठा की सराहना करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र देने की घोषणा की है। सोनपुर मंडल का वाणिज्य विभाग पूर्व में भी कई फर्जी रेलकर्मियों, टिकट दलालों और असामाजिक तत्वों को पकड़ चुका है। यह दशार्ता है कि मंडल प्रशासन न केवल राजस्व संरक्षण बल्कि यात्री सुरक्षा और पारदर्शिता के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है।

यात्रियों से अपील:

रेलवे प्रशासन यात्रियों से आग्रह करता है कि:

- केवल अधिकृत वदीर्धारी रेलकर्मियों से ही संपर्क करें।
- किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत फ्ळ्र या हेल्पलाइन नंबर 139 पर दें।

भास्कर रंजन पटना रेल डीएसपी तो सुबोध कुमार बनाए गए बरौनी रेल डीएसपी

अशोक पासवान ब्यूरो आपकी आवाज। गृह विभाग बिहार सरकार द्वारा अपर पुलिस अधीक्षक एवं पुलिस उपाधीक्षक तथा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी स्तर के 55 पुलिस पदाधिकारियों का स्थानांतरण एवं पदस्थापन किया है। जिसमें सदर टू डीएसपी बेगूसराय भास्कर रंजन को पुलिस उपाधीक्षक रेल पटना तथा सदर वन डीएसपी सुबोध कुमार को रेल पुलिसिया जिला कटिहार के बरौनी में रेल डीएसपी के पद पर अपने स्थान से स्थानांतरित कर पदस्थापित किया गया है। बताते चलें कि पूर्वी चंपारण जिला निवासी भास्कर रंजन 2013 बैच के सीधी भर्ती से डीएसपी हैं तो गया जिला निवासी सुबोध कुमार 2019 बैच में पुलिस निरीक्षक से डीएसपी कोटि में पदोन्नत अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी हैं। दोनों डीएसपी का कार्यकाल पूरा होने पर संभवतः गृह विभाग बिहार सरकार ने एक स्थान से स्थानांतरित कर रेल डीएसपी के पद पर पदस्थापित किया है।

लनमि वि के गणित विभाग से घोंघौर बाबूबरही

मधुबनी के निवासी श्री राम नारायण चौधरी के पुत्र मनोज कुमार चौधरी ने डॉक्टरेट डिग्री में सफलता हासिल किया। श्री मनोज कुमार चौधरी विश्वविद्यालय गणित विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ धर्मेंद्र कुमार यादव के सुपरविजन में "स्टडी ऑफ इनवर्स ट्रिगोनोमेट्रिक नॉन एलिमेंट्री फंक्शन्स इन कांटेस्ट ऑफ एंटीडेरिवेटिव्स" विषय पर शोध कार्य कर रहे थे। अपने शोध कार्य के दौरान उन्होंने पांच शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित किए। इसके

साथ उन्होंने तीन राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत किया। गणित विभाग के विभागाध्यक्ष एवं सह प्रोफेसर डॉ अयाज अहमद, वरीय सह प्रोफेसर डॉ एस एन रॉय, सहायक प्रोफेसर डॉ अभिमन्यु कुमार, सहायक प्रोफेसर डॉ विपुल स्नेही, सहायक प्रोफेसर डॉ नेहा वर्मा, उनके शोधकार्य पर्यवेक्षक डॉ धर्मेंद्र कुमार यादव एवं ऑफिस स्टाफ श्री विष्णु प्रभाकर ने शुभकामनाएं दी एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना किए।

विवेक-विवेक मुहल्ला में फिर बच्ची डूबी नाले में, लोगों ने दौड़कर बचाई जान

अमरदीप नारायण प्रसाद

समस्तीपुर: विवेक-विहार मुहल्ला में बच्ची गिरी नाले में, महिला के चिल्लाने पर लोगों ने दौड़कर बचाई जान। मामला शहर के विवेक विहार मुहल्ला का शुक्रवार सुबह का है। नाला उड़ाही नहीं होने से वर्षा का जलजमाव घुटने भर सड़क पर था। भूईधारा की महिला अपनी करीब 5 वर्षीय बेटी के साथ काम करने जा रही थी। डा० जयशंकर झा के पास नाले की टूटी स्लैब में वह गिर गई। उसकी मां चिल्लाने लगी। लोगों ने दौड़कर बच्ची को नाले से

निकाला और फिर एक बच्ची को डूबने से बचा लिया। मौके पर पहुंचे भाकपा माले नेता सुरेंद्र प्रसाद सिंह ने बताया कि कई बार नगर निगम, महापौर, उपमहापौर आदि को नाले पूरी तरह जाम रहने, नाले, स्लैब एवं सड़क टूटे रहने की शिकायत की गई लेकिन नकारा नगर निगम इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि यदि अविलंब नाले की उड़ाही, टूटे नाले एवं सड़क का निर्माण नहीं किया गया तो मुहल्ला वासियों के साथ मिलकर भाकपा माले आंदोलन चलाने को बाध्य होगी।

जिला पदाधिकारी,तुषार सिंगला ने संभावित बाढ़, मतदान गणन पुनरीक्षण एवं रक्सौल से हल्दिया ग्रीनफील्ड एक्सप्रेवे से संबंधित मुद्दों को लेकर की प्रेस वार्ता

अशोक पासवान ब्यूरो आपकी आवाज।

जिला पदाधिकारी, बेगूसराय, तुषार सिंगला ने कारगिल विजय भवन में संभावित बाढ़, मतदान गणन पुनरीक्षण एवं रक्सौल से हल्दिया ग्रीनफील्ड एक्सप्रेवे से संबंधित मुद्दों को लेकर प्रेस वार्ता आयोजित की गई ।मौके पर सहायक समाहर्ता ,श्री अजय कुमार यादव, अपर समाहर्ता, सिविल सर्जन बेगूसराय, उपनिर्वाचन पदाधिकारी बेगूसराय, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, सभी अवर निर्वाचन पदाधिकारी सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

जिला पदाधिकारी ने बताया कि बेगूसराय जिले के 8 प्रखंड बछवाड़ा, तेघड़ा, बरौनी, बेगूसराय सदर, मटिहानी, शाम्हो अकहा कुरहा, बलिया एवं साहेबपुर कमाल गंगा प्रभावित क्षेत्र है तथा चेरियाबरियारपुर, बखरी एवं नावकोठी बूढ़ी गंडक नदी से प्रभावित है। जिला प्रशासन द्वारा कुल 289 परिचालन योग्य नाव की व्यवस्था की गई है, जिसमें 31 सरकारी नाव एवं 258 निजी नाव शामिल है। इसके साथ ही और अधिक नाव की भी व्यवस्था की जा रही है। वर्तमान में साहेबपुर कमाल अंचल में 20.07.2025 से 5 निजी नाव एवं बलिया अंचल में 2 निजी नावों का परिचालन किया जा रह है। जिला पदाधिकारी ने बताया कि जिले में 78 राहत शिविर एवं 173 सामुदायिक रसोई चिन्हित कर लिया गया है। बाढ़ को लेकर सभी अंचलों में अनुश्रवण समिति की बैठक कर ली गई है। साथ ही अनुश्रवण समिति द्वारा जांच कर 94402 परिवारों की सूची आपदा संपूर्ति पोर्टल पर अपलोड कर दी गई है। जिला पदाधिकारी ने बताया कि सभी तटबंध का संयुक्त निरीक्षण अनुमंडल पदाधिकारी एवं कार्यपालक अभियंता बाढ़ नियंत्रण प्रमंडल द्वारा किया गया है। कुल 8 तटबंधों की निगरानी हेतु 21 कनीय अभियंता एवं 5 सहायक अभियंता की प्रतिनिक्ति की गई है। जिला पदाधिकारी ने बताया कि पशुपालन विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा भी तैयारी पूर्णी कर ली गई है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा 23 चलंता चिकित्सा दल एवं 10 स्थायी चिकित्सा लगाया जा रहा है। तदुपरांत जिला अंतर्गत चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण अंतर्गत चल रहे कार्य के बारे मे जानकारी साँझा की गई। जिला पदाधिकारी ने बताया कि बेगूसराय जिले के सातों विधान सभा में 2245144 मतदाताओं में 2078865 मतदाताओं का गणना प्रपत्र बीएलओ ऐप के माध्यम से ऑनलाईन किया जा चुका है, जो कि कुल मतदाताओं का 92.59 प्रतिशत है।

जिला पदाधिकारी ने बताया कि 25 जून 2025 से प्रारंभ हुए विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर

लगातार जिला स्तर एवं विधान सभा स्तर पर सभी मान्यताप्राप्त राजनैतिक दलों के जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक की जा रही है। साथ ही जिन मतदाताओं का अभी तक गणना प्रपत्र जमा नहीं हुआ है, उन सभी मतदाताओं की सूची सभी राजनैतिक दलों के जनप्रतिनिधियों को उपलब्ध करा दी गई है, ताकि सभी राजनैतिक दलों के जनप्रतिनिधि मतदान केन्द्र स्तरीय एजेंट(बीएलए-2) के माध्यम से गणना प्रपत्र भरने में आवश्यक सहयोग प्रदान करें। इसके साथ ही मृत/स्थानांतरित एवं दोहरी प्रविष्टि वाले निर्वाचकों की भी सूची साझा कर दी गई है। जिला पदाधिकारी ने बताया कि विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर मतदाता जागरूकता रथ के द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया, सार्वजनिक स्थलों पर विशेष गहन पुनरीक्षण होडिंग एवं फ्लैक्स लगाया गया, बेगूसराय के सोशल मीडिया हैंडल के द्वारा प्रचार-प्रसार किया गया है। जिला पदाधिकारी ने बताया कि नगर निगम क्षेत्र में प्रतिशत कम रहने पर सार्वजनिक जगहों पर क्यूआर कोड लगाया गया, क्षेत्र में सफाई कर्मियों के माध्यम से ब्लैंक फार्म भी वितरण कराये गये, साथ ही जिन-जिन बूथों पर गणना प्रपत्र संग्रहण का प्रतिशत कम था, वहां पर विशेष कैंप का आयोजन कर गणना प्रपत्र का संग्रहण कराया गया। उन्होंने बताया कि विशेष गहन पुरीक्षण 2025 में निर्वाचक सूची का प्रारूप प्रकाशन 01.08.2025 को किया जायेगा, इसमें दावा आपत्ति दिनांक 01.08.2025 से 01.09.2025 तक किया जायेगा। निर्वाचक सूची का अंतिम प्रकाशन दिनांक 30.09.2025 को किया जायेगा। इसके साथ ही जिला पदाधिकारी ने बताया कि आगामी बिहार विधान सभा चुनाव में कुल 440 नये मतदान केन्द्र बनाये जा रहे है। पूर्व में 2097 मतदान केन्द्र थे, जो वर्तमान में बढ़कर 2537 हो गई है।

इसके बाद जिला पदाधिकारी ने रक्सौल से हल्दिया ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे परियोजना की विस्तृत जानकारी सभी पत्रकारों को दी। जिला पदाधिकारी ने बताया कि रक्सौल हल्दिया ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे 585.350 किलोमीटर बनाई जायेगी, जिसमें से 407 किलोमीटर बिहार से होकर गुजरेगी। उन्होंने बताया कि बिहार के पूर्वी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी, मुजफफरपुर, समस्तीपुर, बेगूसराय, लखीसराय, मुंगेर, बांका जिले से होकर गुजरेगी। रक्सौल-हल्दिया ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे भारत-नेपाल सीमा पर स्थित रक्सौल पोर्ट तक सीधी और निर्बाध कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। वर्तमान में रकसौल लैंड पोर्ट और हल्दिया पोर्ट के बीच कोई सीधा एक्सप्रेसवे या पहुंच नियंत्रित राजमार्ग उपलब्ध नहीं है यह प्रस्तावित एक्सप्रेस चालू होने के पश्चात इस क्षेत्र के समग्र विकास में अहम भूमिका निभाएगा। यह एक्सप्रेसवे बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल के प्रमुख जिला मुख्यालयों से बेहतर संपर्क सुनिश्चित करते हुए एक कुशल और तेज मार्ग प्रदान करेगा। प्रस्तावित मार्ग नेपाल और भारत के बीच व्यवहार को बढ़ावा देने के साथ साथ परिवहन व्यवस्था को भी अधिक सुलभ और व्यवस्थित बनायेगा। यह पूर्वी भारत के आर्थिक परिदृश्यको नया आकर देगा। यह एक्स्प्रेसवे बेगूसराय जिले के 6 प्रखंड यथा मंसूरचक भगवानपुर, वीरपुर, बेगूसराय, मटिहानी एवं शाम्हो अकहा कुरहा होकर गुजरेगी जिसकी कुल लंबाई 58.30 किलोमीटर प्रस्तावित है । यह बेगूसराय जिला के लिए विकास के असीम संभावनाएं के अवसर खोलेगी।

"सामूहिक चेतना से राष्ट्र का पुनर्निर्माण संभव, युवाओं में राष्ट्रवाद की नई चेतना जरूरी" – कुलपति डॉ. अशोक कुमार

मधेपुरा कॉलेज में एनसीसी के राष्ट्रवाद और युवा विषयक सेमिनार में कुलपति, कर्नल, शिक्षाविदों ने युवाओं को राष्ट्रनिर्माण की रीढ़ बताया

मधेपुरा : 17 बिहार बटालियन एनसीसी, मधेपुरा कॉलेज के बैनर तले शुक्रवार को राष्ट्रवाद और युवाद्व विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन बिंदेश्वरी सभागार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मेजर डॉ. गौतम कुमार ने की और उद्घाटन श्रीकृष्ण विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक कुमार समेत विशिष्ट अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। मंच पर भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय के एनएसएस समन्वयक डॉ. सुधांशु शेखर, 17 बिहार बटालियन के एडम ऑफिसर कर्नल पी. के. चौधरी, डॉ. गुड्डू कुमार, प्रो. प्रसन्ना सिंह, डॉ. हर्ष वर्धन सिंह सहित कई गणमान्य उपस्थित थे।

"बच्चे जन्म लेते ही राष्ट्र निर्माण की कड़ी बन जाते हैं" — डॉ. अशोक कुमार

कुलपति डॉ. अशोक कुमार ने उद्घाटन भाषण में कहा कि "प्रधानमंत्री से लेकर गांव के युवा तक, हर भारतीय राष्ट्र के भविष्य की कड़ी है।" उन्होंने कहा कि राष्ट्रवाद सिर्फ नारा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की दिशा में सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

"भारत का राष्ट्रवाद वसुधैव कुटुंबकम का जीवंत उदाहरण" — डॉ. सुधांशु शेखर

मुख्य अतिथि डॉ. सुधांशु शेखर ने कहा कि "पश्चिम का राष्ट्रवाद जहां टकराव से जुड़ा है, वहीं भारत का राष्ट्रवाद सहिष्णुता, बंधुत्व और प्रकृति प्रेम का प्रतीक है।" उन्होंने युवाओं को एनसीसी को राष्ट्रीय सेवा और नेतृत्व का प्लेटफार्म बताते हुए कहा कि यह मंच "देश सेवा की पहली सीढ़ी" है।

"युवाओं को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनना होगा" — कर्नल पी. के. चौधरी

कर्नल चौधरी ने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा, "राष्ट्रवाद का पहला अध्याय है– ईमानदार नागरिक बनना।" उन्होंने कहा कि "सेना से लेकर सिविल सेवा तक हर मंच राष्ट्रसेवा का विस्तार है, लेकिन यह तभी सफल होगा जब युवा इतिहास को जानकर वर्तमान को दिशा देंगे।"

"फोन की लत युवाओं को राष्ट्रधर्म से भटका रही है" — डॉ. गौतम कुमार

समापन पर अध्यक्षता करते हुए मेजर डॉ. गौतम कुमार ने कहा कि "एनसीसी कैडेट्स देश के लिए मानसिक, शारीरिक और बौद्धिक रूप से तैयार होते हैं।" उन्होंने गर्व से कहा कि "मधेपुरा कॉलेज की एनसीसी यूनिट के पूर्व छात्र देशभर में सेवा कर रहे हैं।"

छात्रों की उत्साही भागीदारी

कार्यक्रम में सृष्टि, सुनैना, आशु, साक्षी, अन्नू, मौसमी, सपना, सिंपल, शिवम, अंकुश पांडे समेत दर्जनों एनसीसी कैडेट्स ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

प्रो. प्रसन्ना सिंह राठौर

प्रो. प्रसन्ना सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि "आज का युवा राष्ट्रवाद के मूल्यों से कटता जा रहा है, वजह है अनियंत्रित तकनीकी उपयोग।" उन्होंने कहा कि "नैतिक शिक्षा के अभाव में राष्ट्रप्रेम कमजोर हो रहा है, इसे शिक्षा में जोड़ना होगा।"

"एनसीसी सिर्फ अनुशासन नहीं, राष्ट्रसेवा का पाठ है" — डॉ. गौतम कुमार

इस आयोजन ने यह साबित किया कि युवाओं में राष्ट्रवाद की भावना जागृत करने के लिए केवल भाषण नहीं, बल्कि प्रतिबद्ध मंच और सार्थक संवाद जरूरी हैं। मधेपुरा जैसे छोटे शहरों में भी अगर इस तरह की पहल हो रही है, तो भारत का भविष्य सचमुच सुनहरा है।

विश्व मानव दुव्यार्रपार विरोधी दिवस के मौके पर जन जागरुकता अभियान चलाया गया

अमरदीप नारायण प्रसाद

समस्तीपुर मे जस्ट राइट फॉर चिल्ड्रन अलायंस के सहयोग से एक्सेस टू जस्टिस (न्याय तक पहुंच) कार्यक्रम की सहयोगी संस्था जवाहर ज्योति बाल विकास केन्द्र के द्वारा समस्तीपुर जिला के शाहपुर पटोरी, मोहीउद्दीन नगर, विद्यापतिनगर, दलसिंहसराय, उजियारपुर, पुसा और समस्तीपुर रेलवे स्टेशनों, बस स्टैंड, ऑटो पड़ाव, हाट-बाजार में विश्व मानव दुव्यार्रपार विरोधी दिवस के मौके पर जन जागरुकता अभियान चलाया गया। पब्लिक ट्रांसपोर्ट से संबंधित सभी जगहों पर स्टॉल लगाकर ऑटो चालक, ई-रिक्शा चालक, बस-ट्रक चालक, सफाई कर्मचारी, चाय-पान दुकानदार, फल विक्रेता, ऑटो गैरेजों और आने-जाने वाले यात्रीयों को मानव दूव्यार्पार/तस्करी, बाल तस्करी से संबंधित जानकारी वाला पंपलेट देकर जागरूक किया। स्थानीय थाना प्रभारी, रेलवे सुरक्षा बल, राजकीय रेल पुलिस, श्रम संसाधन विभाग, जिला प्रशासन से मिलकर बाल तस्करी रोकने हेतु अपील किया गया। जवाहर ज्योति बाल विकास केन्द्र के सचिव सुरेन्द्र कुमार के नेतृत्व में एक्सेस टू जस्टिस कार्यक्रम की जिला कार्यक्रम समन्वयक दीप्ति कुमारी, डॉक्यूमेंटेशन कोऑर्डिनेटर, स्मृति

कुमारी, सामुदायिक सामाजिक कार्यकर्ता बलराम चौरसिया, रीता कुमारी, संगीता कुमारी और रानी कुमारी सहित बाल अधिकार परियोजना के साथी रविन्द्र पासवान, दिनेश प्रसाद चौरसिया, ललिता कुमारी, किरण कुमारी, वीणा कुमारी, नवनीत कुमार, रामदयाल सहनी, राजकुमार पासवान, संदीप कुमार, अनुष्का कुमारी, प्रवीण कुमार, दीपक कुमार चौरसिया, नेहा कुमारी, बबिता कुमारी, संगीता कुमारी, मुस्कान कुमारी नें यात्रियों को बाल तस्करी के बारे में समझाकर रेस्क्यू अभियान चलाया। इस दौरान हासिये पर रहनें वाले जरूरतमंद वंचित परिवारों को भी चिन्हित किया गया। वंचित परिवारों को चिन्हित करते हुए सरकार की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से जोड़ा गया है। आंगनवाड़ी केन्द्र और प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के साथ रैली निकाली गई। किशोर-किशोरियों, महिला-पुरुषों को बाल विवाह न करनें की शपथ दिलाई। वार्ड स्तरीय बाल संरक्षण समिति को जवाबदेह और संवेदनशील बनाने के लिए वार्ड स्तर पर बैठक किया गया। मुसीबत में फंसे बच्चों, बाल श्रम, बाल दूव्यार्पार और बाल विवाह के शिकार बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए तत्काल चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098, पुलिस हेल्पलाइन नंबर 112 पर सूचना देने के लिए जागरुक किया गया।

शैलेन्द्र शैली स्मृति व्याख्यानमाला में बोले उर्मिलेश : अंबेडकर दलितों के नहीं, मानवता के मसीहा थे ; मुकेश चंद्राकर के लिए पूनम वासम ने ग्रहण किया लोकजतन सम्मान, कनक तिवारी ने भी दिया विचारोत्तेजक वक्तव्य

लोकजतन प्रकाशन

रायपुर। "बाबा साहेब आंबेडकर दलितों के नहीं, मानवता के मसीहा थे। उन्हें संविधान सभा का अध्यक्ष गांधीजी की सलाह पर बनाया गया था, जबकि गांधीजी और अंबेडकर की वैचारिकी एकदम अलग थी। इसके बावजूद वे दोनों आधुनिक भारत के निर्माण और उसके लोकतांत्रिक-धर्मनिरपेक्ष भविष्य के बारे में साझा दृष्टिकोण रखते थे। आंबेडकर के बिना संविधान नहीं बन सकता था। वे बहुत कुछ करना चाहते थे, लेकिन वह संभव नहीं था, क्योंकि संविधान सभा में कांग्रेस का बहुमत था। इसके बावजूद आंबेडकर ने एक शानदार संविधान दिया। इस संविधान और इसके बुनियादी मूल्यों की रक्षा करना आज सबसे बड़ी लड़ाई है, क्योंकि आज केंद्र की सत्ता में जो पार्टी है, वह इन मूल्यों को मानने के लिए तैयार नहीं है। ये मूल्य हमारी स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई के दौरान विकसित हुए थे और संघ-भाजपा न केवल इस लड़ाई से दूर थी, बल्कि अंग्रेजी उपनिवेशवाद की समर्थक ही थी।" उक्त विचार वरिष्ठ पत्रकार उर्मिलेश ने कल शैलेन्द्र शैली स्मृति व्याख्यान माला में "लोकतांत्रिक भारत में पत्रकारिता की चुनौतियां" विषय पर बोलते हुए रखे। उन्होंने कहा कि हमारे स्वाधीनता संग्राम सेनानियों ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते हुए समझौता और संघर्ष की रणनीति अपनाई। यह हमारी आजादी की लड़ाई का यूनिक फीचर था। इसी संघर्ष के दौरान धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र, गणराज्य, सामाजिक न्याय, भाईचारे की आधुनिक अवधारणा का विकास हुआ, जिसे हमारे संविधान में समाहित किया गया। उन्होंने संघ भाजपा के इस दुष्प्रचार का कड़ा प्रतिवाद किया कि हमारे मूल संविधान में धर्मनिरपेक्षता शब्द का उल्लेख नहीं था और संविधान के अनुच्छेद 25 (2) (ए) का हवाला देते हुए बताया कि हमारा संविधान किसी भी धर्म को राजधर्म घोषित नहीं करता। उर्मिलेश ने कहा कि बाबा साहेब ने साफ साफ कहा था कि यदि संविधान को क्रियान्वित करने वाले लोग बुरे होंगे, तो यह संविधान भी बुरा ही साबित होगा। आज जो लोग सत्ता में हैं, वे आज इस संविधान के रहते ही आम जनता को इसके बुनियादी मूल्यों से अलग करने की साजिश रच रहे हैं। जैसे जैसे ये मूल्य कमजोर हो रहे हैं, भारत में लोकतंत्र भी कमजोर हो रहा है और वह लोकतांत्रिक गणराज्य से कॉर्पोरेट राज में बदल रहा है। इसका असर मीडिया और प्रेस पर भी पड़ रहा है। कॉर्पोरेट मीडिया आम जनता के सामने झूठ परोसने का माध्यम बन गया है। वह आरक्षण विरोधी और मंदिर समर्थक हो गया है। उन्होंने जोर दिया कि राष्ट्रवाद वह है, जो जाति और धर्म के ढांचे से बाहर निकलकर देश की जनता को सहनशीलता और सहिष्णुता के आधार पर मोहब्बत करना सीखाता है। लोकतंत्र के इस स्वरूप को मीडिया और समाज में बचाए रखना ही आज की सबसे बड़ी चुनौती है। उल्लेखनीय है कि यह व्याख्यान माला 24 जुलाई से शुरू होकर 7 अगस्त तक चलेगी। यह पहला दिन था और इसी दिन देश के किसी पत्रकार को पत्रकारिता में उसके उल्लेखनीय योगदान के लिए लोकजतन सम्मान से अभिनंदित किया जाता है। इस

समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार दिवाकर मुक्तिबोध ने की। इस वर्ष का लोकजतन सम्मान बीजापुर के शहीद पत्रकार मुकेश चंद्राकर को दिया गया, जो छत्तीसगढ़ में कॉरपोरेट विरोधी पत्रकारिता के आइकॉन थे। मुकेश की ओर से यह सम्मान उनकी बहन और प्रसिद्ध कवियित्री पूनम वासम ने ग्रहण किया। इस अवसर पर सम्मान ग्रहण करते हुए उन्होंने मुकेश की मानवीय खूबियों और उसकी पत्रकारिता के गुणों की विशेष चर्चा की तथा उन्हें पूरे समाज का हीरो बताया। रायपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष प्रफुल्ल ठाकुर ने विस्तार से बताया कि एक छोटे से गांव बासेगुड़ा से निकलकर, झंझावातों का सामना करते हुए, सलवा जुडूम आंदोलन के दौर में विस्थापन और उत्पीड़न का शिकार होते हुए किस तरह मुकेश ने पत्रकारिता जगत में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने बताया कि अपने जीवंत संपर्कों और संबंधों के आधार पर मुकेश ने कई लोगों को नक्सलियों के चंगुल से छुड़ाया। मुकेश में अकेले संघर्ष करने का माद्दा भी था और वे किसी भी सही मुद्दे पर अकेले धरने पर भी बैठ सकते थे। छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता की चुनौती का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि पिछली सरकार की तरह इस सरकार में भी पत्रकारों को नियंत्रित करने की कोशिश की जा रही है, जो दुर्भाग्यजनक है। वरिष्ठ अधिवक्ता, लेखक और संविधान विशेषज्ञ कनक तिवारी ने भी इस अवसर पर विचारोत्तेजक वक्तव्य दिया। उन्होंने स्वयं को गांधीवादी-वामपंथी और कॉमरेड बताते हुए कहा कि संविधान में "हम भारत के लोग" संप्रभु हैं, न कि कोई राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या अन्य कोई अधिकारी। यह आंबेडकर ही थे, जिन्होंने प्रेस की आजादी को नागरिक आजादी से जोड़ा और उन्होंने ही देश को लोकतांत्रिक गणराज्य बनाया। उन्होंने कहा कि आजादी के आंदोलन के दौरान प्रेस ने बड़ी कुर्बानियां दी थीं और उस समय गांधीजी सबसे बड़े पत्रकार थे।आज इस पत्रकारिता पर जो खतरा है, वह अजीत अंजुम और हेमंत मालवीय पर हो रहे हमलों के रूप में देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि देश में लोकतंत्र और अंबेडकर के संविधान की रक्षा करके ही जन पक्षधर पत्रकारिता को बचाया जा सकता है। वरिष्ठ फोटो पत्रकार विनय शर्मा के निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने और सुदीप ठाकुर, रमेश अनुपम, कमल शुक्ल, सुधीर तंबोली और अरविंद आदि के द्वारा अतिथियों के सम्मान के साथ कार्यक्रम की शुरूआत में लोकजतन के संपादक बादल सरोज ने इसके संस्थापक संस्थापक शैलेन्द्र शैली के देश की राजनीति और जन आंदोलनों को संगठित करने में उनके महत्वपूर्ण योगदान को सामने रखते हुए इस सम्मान और व्याख्यान माला के महत्व का प्रतिपादन किया। उन्होंने कहा कि मुकेश चंद्राकर वो जुगनू थे, जिनमें घोर अंधकार को तिरोहित करने की क्षमता थी। उनकी शहादत का सम्मान करते हुए लोकजतन स्वयं को सम्मानित महसूस कर रहा है। इस अंधकारपूर्ण दौर में लोकजतन भी जुगनू का ही काम कर रहा है। जनवादी लेखक संघ के राज्य सचिव पूर्णचंद्र रथ ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। इस अवसर पर मुकेश चंद्राकर के सहयोग से और रौनक शिवहरे तथा प्रसून गोस्वामी के निर्देशन में बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया। अभी तक डॉ. राम विद्रोही (ग्वालियर), कमल शुक्ला (बस्तर-रायपुर), लज्जाशंकर हरदेनिया (भोपाल), अनुराग द्वारी (भोपाल), राकेश अचल (ग्वालियर), पलाश सुरजन (भोपाल) आदि प्रमुख पत्रकारों को इस सम्मान से अभिनंदित किया जा चुका है। लोकजतन द्वारा रायपुर में पहली बार इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें बिलासपुर, जगदलपुर, दुर्ग, बीजापुर, दंतेवाड़ा, जांजगीर, कांकेर, कोरबा से आए पत्रकार और बुद्धिजीवी भारी संख्या में उपस्थित थे।

करण वीर मेहरा को मिलेगा डॉन 3 में विलेन का रोल!

अभिनेता और बिग बॉस 18 के विजेता करण वीर मेहरा को मशहूर निर्माता कंपनी एक्सेल एंटरटेनमेंट के ऑफिस के बाहर देखा गया। खबर है कि करण को आने वाली फिल्म डॉन 3 में खलनायक की भूमिका में लेने के लिए विचार किया जा रहा है। यह रोल पहले विक्रांत मैसी निभाने वाले थे, लेकिन उनके फिल्म से बाहर होने के बाद यह मौका करण को मिल सकता है। इंडस्ट्री के एक करीबी सूत्र ने बताया, हालांकि अभी तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन हाल ही में फिल्म सिला से उनका फर्स्ट लुक सामने आया, जिसे लोगों ने काफी पसंद किया। ऐसे में उन्हें डॉन 3 में विलेन रोल के लिए अप्रोच किया जा सकता है।

फरहान अख्तर निर्देशित डॉन 3 इस लोकप्रिय एक्शन फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म है। इस फिल्म के रिलीज की संभावना दिसंबर 2026 तक है। यह फ्रैंचाइजी 1978 में बनी अमिताभ बच्चन स्टारर फिल्म डॉन से शुरू हुई थी। इसके बाद 2011 में इसके रीमेक डॉन – द चेज़ बिगिन्स में शाहरुख खान लीड एक्टर के तौर पर नजर आए। वर्कफ्रंट की बात करें तो करण वर्तमान में मैरी कॉम और सरबजीत जैसी दमदार फिल्मों के लिए मशहूर डायरेक्टर उमंग कुमार निर्देशित सिला की शूटिंग में व्यस्त हैं। इस फिल्म में वह जहराक नाम के विलेन का खतरनाक किरदार निभा रहे हैं। करण वीर ने सोशल मीडिया पर अपना फर्स्ट लुक शेयर किया था, जिसमें वह खून से लथपथ, लंबे उलझे बाल और हाथ में तलवार लिए नजर आए। इस लुक को शेयर करते हुए उन्होंने कैप्शन में लिखा, खुद ही खुदा, खुद ही इंसाफ! इस फिल्म में हर्षवर्धन राणे और सादिया खतीब भी अहम भूमिकाओं में हैं। बता दें कि सादिया फिल्म रक्षा बंधन में अभिनेता अक्षय कुमार के साथ काम कर चुकी हैं। उन्होंने फिल्म में अक्षय की बहन की भूमिका निभाई थी।

सिला को जी स्टूडियोज की ओर से दिखाया जायेगा। इसे ब्लू लोटस पिक्चर्स और स्टार्क एंटरटेनमेंट के बैनर तले बनाया जा रहा है। साथ ही इनोवेशन्स इंडिया भी इस फिल्म में जुड़ा है। डॉन 3 में करण वीर मेहरा की एंट्री दर्शकों के लिए एक नया रोमांच लेकर आ सकती है। फैंस फिल्म से जुड़ी आधिकारिक घोषणाओं का इंतजार बेसब्री से कर रहे हैं।

राणा नायडू के पहले सीजन में अदिति हुई थीं रिजेक्ट, दूसरे में बनीं स्टंट वुमन

एक्ट्रेस अदिति शेट्टी इन दिनों वेब सीरीज राणा नायडू के सीजन 2 में नजर आ रही हैं। इसमें उन्होंने तसनीम का किरदार निभाया है, जो एक शक्तिशाली महिला का रोल है। आदिति ने बातचीत के दौरान बताया कि इस किरदार को निभाने के लिए उन्होंने क्या-क्या तैयारी की।

वेब सीरीज राणा नायडू में काम करने का अनुभव कैसा रहा?

राणा नायडू वेब सीरीज में काम करने का अनुभव मेरे लिए बेहद खास और यादगार रहा। यह मेरे लिए किसी आशीर्वाद से कम नहीं था। पूरी टीम बहुत ही अच्छी और प्रोफेशनल है। अगर कलाकारों की बात करूं तो राणा दग्गुबाती, सुशांत सिंह, अर्जुन रामपाल और अभिषेक बनर्जी जैसे शानदार अभिनेताओं के साथ काम करना मेरे लिए एक बहुत बड़ी बात थी। मैंने इन सभी से बहुत कुछ सीखा। कुल मिलाकर मेरा अनुभव बहुत ही अच्छा था।

तसनीम का किरदार आपकी रियल लाइफ पर्सनैलिटी से कितना मेल खाता है या फिर कितना अलग है?

आदिति और तसनीम एक-दूसरे से काफी अलग हैं। मैं असल जिंदगी में बहुत तेज-तेज और जल्दबाजी में बोलने वाली हूं, जबकि तसनीम बहुत ठहरकर, सोच-समझकर बात करती है। जब तसनीम कुछ कहती है, तो लोग उसे ध्यान से सुनते हैं। तसनीम बहुत मुंहफट और स्ट्रेट फॉरवर्ड है। उसे पता है कि अपना काम दूसरों से कैसे निकलवाना है और वह किसी के सामने झुकती नहीं। जबकि मैं असल जिंदगी में थोड़ी अलग हूं।

अपने किरदार के बारे में क्या कहेंगी?

इस सीरीज में मैं तसनीम का किरदार निभा रही हूं, जो एक स्टंट वुमन है। यह किरदार एक बहुत ही मजबूत और आत्मनिर्भर महिला का है। तसनीम राणा के वर्ल्ड में उन चुनिंदा महिलाओं में से एक है जो किसी के सामने भी डटकर खड़ी हो सकती है और जो अपने हक के लिए लड़ सकती है। मुझे यह किरदार इसीलिए भी खास लगा क्योंकि यह न केवल फिजिकली स्ट्रॉन्ग है, बल्कि इमोशनली भी बहुत ग्राउंडेड है। एक और खूबसूरत पहलू यह है कि मेरे और अभिषेक बनर्जी के किरदार के बीच एक बेहद प्यारी लव स्टोरी भी दिखाई गई है। जहां पूरी सीरीज में एक्शन और इंटेंस ड्रामा है, वहीं यह लव स्टोरी दर्शकों को एक इमोशनल कनेक्शन भी देती है, जो आज के समय में बहुत कम देखने को मिलती हैं।

राणा दग्गुबाती के साथ एक्शन सीन करते समय आपको कितनी नर्वसनेस हुई? क्या कोई मोटिवेशन मिला?

जब मुझे पता चला कि मेरा राणा दग्गुबाती सर के साथ वन-ऑन-वन एक्शन सीन है, तो मैं बहुत खुश थी, लेकिन उतनी ही नर्वस भी। मन में कई सवाल थे। कैसे करूंगी, क्या ठीक से कर पाऊंगी। लेकिन जैसे ही मैं सेट पर पहुंची, सब कुछ अपने आप ही आसान हो गया। राणा सर ने माहौल इतना नॉर्मल बना दिया था कि नर्वसनेस धीरे-धीरे खत्म हो गई। वो सेट पर बहुत शांत और सहयोगी थे। उन्होंने कभी मुझे ऐसा महसूस नहीं होने दिया कि मैं नई हूं या कुछ गलत कर रही हूं।

आपको पहले सीजन में रिजेक्शन मिला। अब जब आप दूसरे सीजन का हिस्सा हैं, तो कैसा लग रहा है?

देखिए, रिजेक्शन किसी को भी अच्छा नहीं लगता मुझे भी नहीं लगा था। हां, थोड़ी निराशा जरूर हुई थी, क्योंकि मैं पहले सीजन का हिस्सा बनना चाहती थी। लेकिन मैं ये भी समझती हूं कि हर ऑडिशन में सिलेक्शन नहीं होता। ये प्रोसेस का हिस्सा है और इससे सीख मिलती है। जब मुझे पता चला कि इसका दूसरा सीजन आ रहा है, तो मैं बिना किसी झिझक के फिर से ऑडिशन देने पहुंच गई। इस बार मेरा सिलेक्शन हुआ और मुझे एक बेहतरीन किरदार निभाने का मौका मिला।

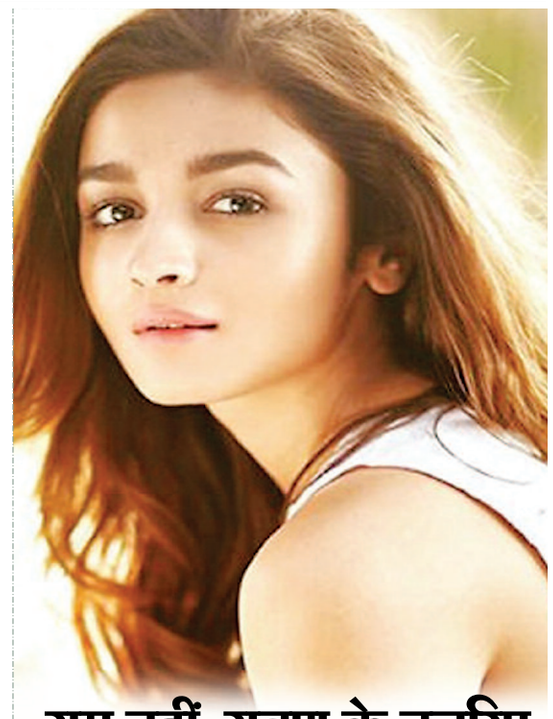

राम नहीं, रावण के नजरिए से बनेगी रामायण, आलिया निभाएंगी सीता का रोल?

फिल्म निर्माता नितेश तिवारी ने अपनी फिल्म रामायण का एलान कर दिया है। यह फिल्म दो भागों में रिलीज होने वाली है। इस पर अभी काम चल रहा है। अभिनेता विष्णु मांचू ने भी हाल ही में खुलासा किया है कि उनके पास भी एक स्क्रिप्ट तैयार है। लेकिन, रामायण का उनका संस्करण रावण के जीवन पर केंद्रित है। बातचीत में विष्णु मांचू से पूछा गया कि वह कहानी के हिसाब से किसे कास्ट करेंगे। इस पर उन्होंने कहा भगवान राम की भूमिका के लिए मेरे दिमाग में सबसे पहले अभिनेता सूर्या का नाम आता है। सीता की भूमिका के लिए, उन्होंने आलिया भट्ट को चुना।

स्क्रिप्ट तैयार है लेकिन किरदार नहीं हैं

उन्होंने खुलासा किया मेरे पास रावण के बारे में एक स्क्रिप्ट पहले से ही है। इसमें उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक की कहानी है। उसी के लिए, मैंने 2009 में सूर्या से राम का किरदार निभाने के लिए संपर्क किया था। हालांकि बजट मेरे हिसाब से ठीक नहीं था, इसलिए बात नहीं बन पाई। फिल्म का निर्देशन राघवेंद्र राव करने वाले थे। मेरे पिता रावण का किरदार निभाने वाले थे। मेरे पास इसकी स्क्रिप्ट और संवाद तैयार हैं, लेकिन मुझे नहीं पता कि मैं कभी इसे निभा पाऊंगा या नहीं।

क्या तारा सुतारिया ने वीर पहाड़िया के साथ रिलेशनशिप किया कन्फर्म?

बॉलीवुड एक्ट्रेस तारा सुतारिया एक बार फिर अपने रिलेशनशिप स्टेटस को लेकर सुर्खियों में हैं। तारा और वीर पहाड़िया के बीच की नजदीकियां एक बार फिर चर्चा का विषय बन गई हैं। अब वीर का एक कमेंट दोनों के बीच डेटिंग की अफवाहों को हवा दे रहा है। दरअसल एक दिन पहले तारा सुतारिया ने पंजाबी सिंगर एपी ढिल्लों के साथ एक तस्वीर शेयर की हैं, जिस पर वीर पहाड़िया ने एक प्यारा सा कमेंट किया। तारा के लेटेस्ट पोस्ट पर वीर ने 'माय लव' लिखते हुए कमेंट किया, जिसके जवाब में तारा ने रिप्लाई देते हुए 'माइन' लिखा। दोनों के बीच इस बातचीत को देखकर फैंस को ये समझने में ज्यादा देर नहीं लगी कि दोनों शायद अपने रिलेशनशिप की तरफ इशारा कर रहे हैं। कई लोगों ने तो ये भी कहा कि अब फाइनली दोनों ने अपने रिश्ते को पब्लिकली एक्सेप्ट कर लिया है।

तारा का एपी के साथ नया गाना

तारा सुतारिया की ये पोस्ट उनके नए गाने 'थोड़ी सी दारू' से जुड़ी थी, जिसमें वो एपी ढिल्लों के साथ नजर आ रही हैं। फोटोशूट की इन रोमांटिक तस्वीरों को जहां कई फैंस ने पसंद किया, वहीं वीर पहाड़िया के कमेंट ने सबका ध्यान खींच लिया। वीर के प्यार भरे कमेंट पर तारा के जवाब ने भी फैंस का ध्यान खींचा।

दोनों के बीच डेटिंग की अटकलें

गौरतलब है कि तारा और वीर को कुछ समय पहले मुंबई के एक स्पेनिश रेस्टोरेंट से साथ निकलते हुए स्पॉट किया गया था। तभी से दोनों के बीच रिलेशनशिप की अटकलें तेज हो गई थीं। पहले तारा का नाम एपी ढिल्लों के साथ भी जुड़ा था, लेकिन अब सोशल मीडिया पर वीर पहाड़िया के साथ उनके इस मोमेंट ने काफी कुछ साफ कर दिया है।

मिट्टी में मेरा किरदार राघव बिल्कुल मेरे जैसा है

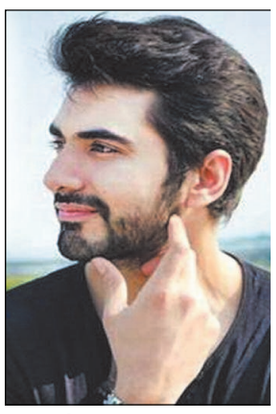

एक्टर इश्वाक सिंह इन दिनों वेब सीरीज मिट्टी में राघव का किरदार निभाने को लेकर चर्चाओं में हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें असल जिंदगी और शो में अपने किरदार की कहानी के बीच कुछ समानताएं महसूस होती हैं। जब इश्वाक सिंह से पूछा गया कि राघव का किरदार उनके लिए इतना खास क्यों है, तो उन्होंने कहा कि राघव की कहानी में कई बातें ऐसी थीं, जो उन्हें अपनी जिंदगी से मिलती-जुलती लगीं। सबसे पहली और अहम बात जो उन्हे राघव से जोड़ती है, वो है उनका अपने गांव और परिवार से गहर जुड़ाव। उन्होंने शो के बारे में कहा, जब मैंने मिट्टी की कहानी पढ़ी, तो यह मेरे दिल को छू गई। ऐसी कहानियां बहुत कम मिलती हैं, जो व्यक्तिगत भी हों और सबके लिए मायने भी रखें मिट्टी की कहानी इंसान और उसके गांव के बीच खास रिश्ते पर आधारित है। सीरीज की कहानी राघव के इर्द-गिर्द घूमती है वह एक बड़े शहर में काम करने वाला सफल एडवरटाइजिंग एग्जीक्यूटिव है। शो में दिलचस्प मोड़ तब आता है, जब वह अपने दादाजी के लिए गांव लौटता है

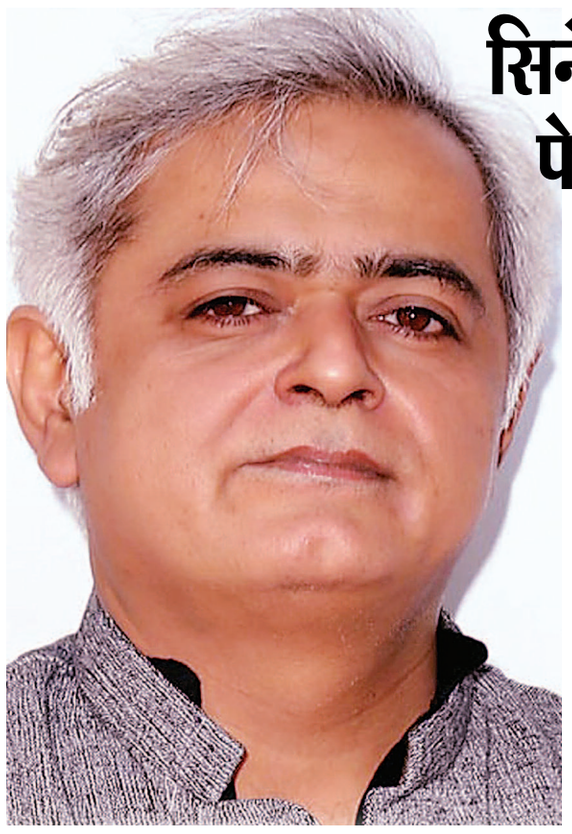

सिनेमा के रखवाले अपने ही एक फिल्म फेस्टिवल को जीवित रखने में नाकाम

फिल्म निर्माता हंसल मेहता ने मामी मुंबई फिल्म फेस्टिवल 2025 के रद्द होने पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए इसे एक क्रूर विडंबना बताया कि सिनेमा के रखवाले अपने ही एक फिल्म फेस्टिवल को जीवित रखने में नाकाम रहे।

निर्माता ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, यह कितनी अजीब विडंबना है कि भारत की आर्थिक और फिल्मी राजधानी मुंबई, जो अपनी चकाचौंध के लिए जानी जाती है, खुद अपना एक फिल्म समारोह भी कायम नहीं रख पाई। सिनेमा के तथाकथित रखवाले, जो सिर्फ चमक-दमक वाले मंचों और सुरक्षित दांवों की तलाश में रहते हैं, उन्होंने इसे कुछ जुनूनी लोगों के भरोसे छोड़ दिया, न कोई समारोह है, न कोई गुस्सा। बस एक धीमी, खामोश, गुमनामी। जिसे हमारी संस्कृति का एक मजबूत स्तंभ होना चाहिए था, वह अब बस एक फुटनोट बनकर रह गया है। प्रगति के नाम पर उपेक्षा का एक और शिकार। मामी मुंबई फिल्म फेस्टिवल लगभग तीन दशकों से फिल्म जगत में एक प्रमुख स्थान रखता है। हालांकि, आयोजकों ने सोमवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा कर इस साल के महोत्सव के रद्द होने की जानकारी दी। महोत्सव के निर्देशक शिवेंद्र सिंह डूंगरपुर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट शेयर किया था, जिसमें उन्होंने लिखा, आपको सूचित करता हूं कि मामी मुंबई फिल्म महोत्सव 2025 का संस्करण इस साल आयोजित नहीं किया जाएगा। हम एक महोत्सव को नई टीम के साथ नया रूप देने की प्रक्रिया में हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह महोत्सव भारत और दुनियाभर के सर्वश्रेष्ठ स्वतंत्र, क्षेत्रीय और क्लासिक सिनेमा के एक प्रमुख प्रदर्शन के रूप में लौटे। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि वे अगले साल महोत्सव के एक नए संस्करण के साथ वापस आएंगे। उन्होंने आगे कहा, हम महोत्सव को पुनर्निर्धारित करने के लिए पूरी लगन से काम कर रहे हैं और 2026 संस्करण की नई तारीखों की घोषणा जल्द से जल्द करेंगे।

सारा अली खान के साथ अपनी केमिस्ट्री पर आदित्य रॉय कपूर का खुलासा

आदित्य रॉय कपूर अपनी नई फिल्म मेट्रो इन दिनों की सफलता से खुश हैं। हाल ही में उन्होंने अपनी सह-कलाकार सारा अली खान के साथ अपनी दोस्ती और फिल्म की शूटिंग और प्रमोशन के अनुभव को शेयर किया। बातचीत के दौरान आदित्य ने बताया कि उनकी और सारा की केमिस्ट्री स्वाभाविक है। उन्होंने कहा, केमिस्ट्री बनाना संभव नहीं है, यह अपने आप बनती है। अच्छी कहानी और निर्देशक इसमें मदद करते हैं। उन्होंने आगे कहा, हम पहले एक-दूसरे को ज्यादा नहीं जानते थे। सामाजिक तौर पर थोड़ा-बहुत परिचय था, लेकिन फिल्म के सेट और प्रमोशन के दौरान हमने एक-दूसरे को बेहतर समझा। प्रमोशन के समय हमने साथ में ज्यादा वक्त बिताया और एक-दूसरे के बारे में बहुत कुछ सीखा।

आदित्य ने थिएटर और ओटीटी को किया कंपेयर

आदित्य को थिएटर और ओटीटी दोनों में काम करना पसंद है, लेकिन थिएटर में फिल्म रिलीज होने का रोमांच अलग है। उन्होंने कहा, निर्देशक अनुराग बसु के साथ काम करना शानदार रहा। लूडो के बाद इस फिल्म में उनके साथ फिर से काम करना रोमांचक था। उन्होंने बताया कि थिएटर में फिल्म का प्रदर्शन सभी के लिए महत्वपूर्ण होता है, लेकिन आखिर में फिल्म का आनंद ही सबसे जरूरी है। ओटीटी पर रिलीज होने वाली फिल्मों में थोड़ा ज्यादा आराम मिलता है, लेकिन थिएटर का अनुभव अनोखा है।

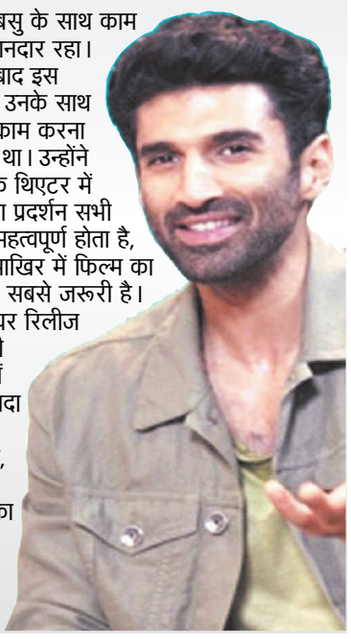

स्वात्वाधिकारी, मुद्रक प्रकाशक, एवं प्रधान संपादक, पी. के. कर्ण दूरभाष : 7209222811, कार्यकारी संपादक, डॉ. बी. के. मल्लिक, मोबाइल: 9810075792
ईमेलः aapkiawaazhindinewschannel@gmail.com, नई दिल्ली से डी 45A, जैतपुर पार्ट 2, नई दिल्ली 110044 द्वारा प्रकाशित, एवं पी0के0 प्रिंटिंग वर्क्स, वैशाली से मुद्रित।